وقف لله تعالى لا يجوز بيعه

नबी ﷺ की संक्षिप्त जीवनी

लेखक:

हैसम बिन मुहम्मद सरहान

पूर्व शिक्षक अल-हरम शिक्षण संस्थान, मस्जिद -ए- नबवी
व महा प्रबंधक "अत्तासी अल-इल्मी डॉट कॉम"

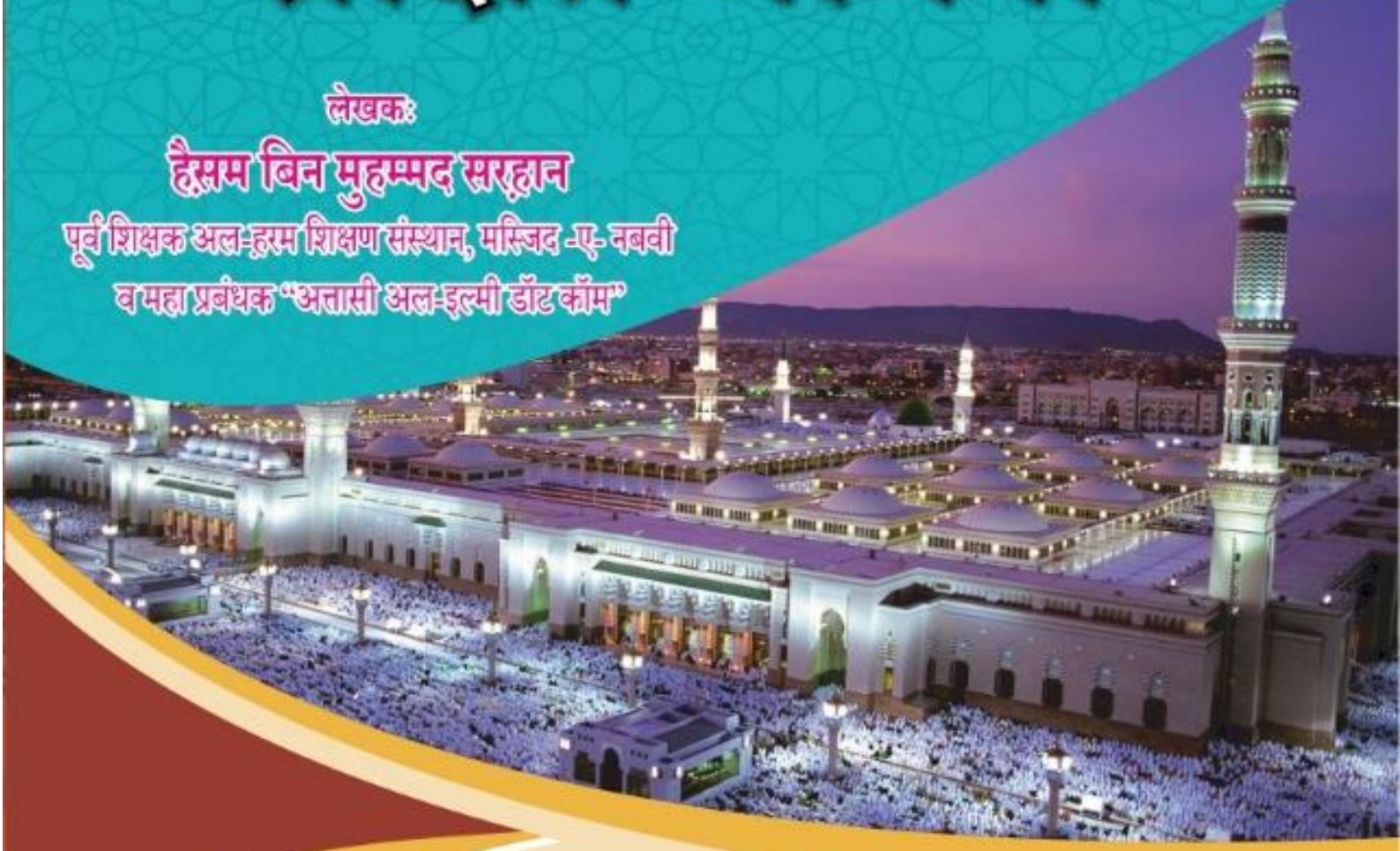

हिंदी अनुवाद:

साबिर हुसैन मुहम्मद मोजीबुर रहमान

[रिसर्च स्कॉलर, इस्लामिक यूनिवर्सिटी मदीना मुनव्वरा]

طبع على نفقة الشيخ أبي محمد خالد حفظه الله

नबी ﷺ की

संक्षिप्त जीवनी

लेखक:

हैसम बिन मुहम्मद सरहान

पूर्व शिक्षक अल-हरम शिक्षण संस्थान, मस्जिद -ए- नबवी

व महा प्रबंधक "अत्तासी अल-इल्मी डॉट कॉम"

www.alsarhaan.com

غفر الله له ولوالديه ولمن أعانه على إخراج هذا الكتاب

अल्लाह हमारे शैख़, उनके माता पिता तथा जिन्होंने इस किताब को मूर्त रूप देने में उनकी सहायता की सब को क्षमा करे

हिंदी अनुवाद:

साबिर हुसैन मुहम्मद मोजीबुर रहमान

[रिसर्च स्कॉलर, इस्लामिक यूनिवर्सिटी मदीना मुनव्वरा]

प्रथम संस्करण

सभी अधिकार सुरक्षित हैं

सिवाय उसके जो लेखक के पुनरावलोकन पश्चात फ्री बाँटने के लिये इसका अनुवाद अथवा प्रिंट करना चाहे

निम्नांकित ईमेल पर संपर्क करें:

islamtorrent@gmail.co

sabirhussainzamanwi@gmail.com

فسح وزارة الإعلام

प्राक्कथन

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إنَّ الحمدَ لله نحمدُه ونستعينُه ونستغفرُه، ونعوذُ بالله من شُرور أنفسِنا ومن سيِّئات أعمالنا، من يهدِهِ اللهُ فلا مُضلَّ له، ومن يُضللْ فلا هاديَ له، وأشهد أن لا إله إلَّا اللهُ وحده لا شريك له، وأشهد أنَّ محمَّدًا عبده ورسوله ﷺ، ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسۡلِمُونَ ١٠٢﴾[آل عمران]، ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفۡسٍ وَٰحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنۡهَا زَوۡجَهَا وَبَثَّ مِنۡهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَآءً وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ ٱلَّذِى تَسَآءَلُونَ بِهِۦ وَٱلۡأَرۡحَامَ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيۡكُمۡ رَقِيبًا ١﴾[النِّساء]، ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَقُولُواْ قَوۡلًا سَدِيدًا ٧٠ يُصۡلِحۡ لَكُمۡ أَعۡمَٰلَكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوبَكُمۡ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدۡ فَازَ فَوۡزًا عَظِيمًا ٧١﴾[الأحزاب].

أمَّا بعد:

यह कुछ वाक्य हैं जिनका ज्ञान होना हरेक उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत आपका ढ़ंग और आपके बारे में जानने का इच्छुक हो, इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह कहते हैं: (जब लोक एवं परलोक में बंदे का सौभाग्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत व मार्गदर्शन से जुड़ा है अतएव हरेक व्यक्ति पर वाजिब है जो अपने आपका शुभचिंतक है और अपनी मुक्ति व सौभाग्य चाहता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में, आपकी जीवनी तथा सीरत के विषय में ज्ञान अर्जित करे ताकि वह जाहिलों व अज्ञानियों की पंक्ति से निकल जाए और आपके अनुयायिओं, आपके संगठन तथा समूह में शामिल हो जाए, और इस विषय में लोगों के कई प्रकार हैं कुछ कम करने वाले, तो कुछ अत्याधिक करने वाले एवं कुछ तो बिल्कुल वंचित ही हैं, और फज़्ल (कृपा) तो अल्लाह के हाथ में है जिसे चाहता है उस पर अपनी कृपा दृष्टि रख देता है, और अल्लाह बड़ा महान फज़्ल वाला है)।

मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह (ईश्वर) से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तथा आपको अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत करने वाला बनाए और जिसका आपने आदेश दिया है उस आदेश का पालन तथा जिससे मना किया है उससे रुकने का आशीर्वाद दे, हे अल्लाह मुहम्मद और मुहम्मद के परिवार वालों पर दरूद व रहमत नाज़िल (अवतरित) कर जिस प्रकार तूने इब्राहीम और उनके परिवार वालों पर रहमत नाज़िल की, हे अल्लाह तू मुहम्मद और मुहम्मद के परिवार वालों पर बरकत (आशीर्वाद) नाज़िल कर जिस प्रकार तूने इब्राहीम और इब्राहीम के परिवार वालों पर बरकत नाज़िल की थी, निःसंदेह तू प्रशंसा के योग्य एवं महिमावान है।

पहला: पाठ
नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जीवन चरित, स्वभाव एवं गुण

आप ﷺ का स्वभाव एवं गुण

नबी ﷺ की वंशावली

आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुलमुत्तलिब पुत्र हाशिम पुत्र अब्दे मुनाफ़ पुत्र कुसैय पुत्र किलाब पुत्र मुर्रा पुत्र काब पुत्र लुऐय्य पुत्र ग़ालिब पुत्र फ़िह्र पुत्र मालिक पुत्र अन-नज़्र पुत्र किनाना पुत्र ख़ुज़ैमा पुत्र मुदरिका पुत्र इलयास पुत्र मुज़र पुत्र नज़ार पुत्र मअद्द पुत्र अदनान, तथा अदनान अल्लाह की राह में क़ुर्बान किये गये इस्माईल पुत्र इब्राहीम अलैहिमस्सलाम की संतान में से थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस धरती के सबसे उच्च कुल एवं वंश से संबंध रखते थे, तथा ह़दीस़ में आया है कि हिरक़्ल -रोम का राजा- ने अबू सुफ़ियान से कहा थाः "**मैंने तुमसे उसके वंश के संबंध में पूछा था ? तो तुमने बताया कि वह तुममें उच्च कुल से संबंध रखते हैं, रसूल ऐसे ही होते हैं वो अपनी समुदाय के सबसे उच्च कुल से संबंध रखते हैं**"।

आप का चयन

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**अल्लाह तआला ने इस्माईल की संतान में से किनाना का चयन किया, तथा किनाना में से क़ुरैश का चयन किया, और क़ुरैश में से बनू हाशिम का चुनाव हुआ तथा बनू हाशिम में से अल्लाह तआला ने मुझे चुना**"।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम

आप के नाम सभी विशेषण हैं ये केवल नाम मात्र नहीं हैं जो सिर्फ पहचान का लाभ देते हैं, बल्कि ये आप में विद्यमान गुणों एवं विशेषताओं के यौगिक से निकले हुए नाम हैं जो आपके कामिल व पूर्ण होने तथा आपके लिए प्रशंसा को अपरिहार्य करते हैं, उनमें से कुछ नाम निम्नांकित हैं :

मुहम्मद

यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सुप्रसिद्ध नाम है, और इसी नाम के द्वारा स्पष्ट रूप से तौरात में आप का वर्णन हुआ है। और इसका अर्थ हैः (ऐसे अनेक गुणों से सुसज्जित जिन पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा एवं सराहना की जाती है।

अह़मद

अर्थातः अल्लाह की मख़लूक़ (रचना) में सर्वाधिक प्रशंसनीय, आपके अनेक गुणों के कारण आकाश वासी, धरती वासी तथा समस्त लोक एवं परलोक के वासी आपकी प्रशंसा करते हैं, और इसी नाम के द्वारा ईसा अलैहिस्सलाम ने आपका नामकरण किया है।

अल-मुतवक्किल

इस नाम के द्वारा आपका नामकरण करने का कारण यह है कि धर्म को स्थापित एवं उसका प्रचार-प्रसार करने में आप अल्लाह तआला पर ऐसा तवक्कुल व भरोसा करते थे कि उस प्रकार का तवक्कुल आपके सिवा कोई अन्य नहीं कर सकता।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम	अल-माही	जिनके द्वारा अल्लाह तआला कुफ्र को मिटाता है, और जिस प्रकार से आपके द्वारा अल्लाह तआला ने कुफ्र को मिटाया उस प्रकार से किसी अन्य के द्वारा नहीं मिटा गया।
	अल-हाशिर	जिनके क़दमों तले लोग इकट्ठा किये जायेंगे, तो मानो आप इसी लिये भेजे गये थे कि लोगों को हश्र में (महाप्रलय के पश्चात) इकट्ठा किया जाये।
	अल-आक़िब	जिनके बाद कोई नबी नहीं है, अर्थात आप नबियों की श्रृंखला को समाप्त करके मोहर लगा देने वाले हैं।
	अल-मुक़फ़्फ़ी	जो अपने पूर्वजों के पदचिन्हों का अनुसरण करे, अर्थात अल्लाह तआला ने आप को पूर्व के रसूलों के पदचिन्हों का अनुसरण करने के लिये अवतरित किया।
	नबीयुत्तौबा	जिनके द्वारा अल्लाह तआला ने धरती वासियों के लिये तौबा का द्वार खोला था, एवं इस अधिकता के साथ लोगों के तौबा को स्वीकार किया कि इससे पूर्व इसकी मिसाल नहीं मिलती, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपना हाल यह था कि आप अन्य की तुलना में सबसे अधिक तौबा व इस्तिग़फार (पश्चाताप एवं क्षमा याचना) करने वाले थे।
	नबीय्युल मलह़मा	जो अल्लाह के शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध लड़ने के लिये भेजे गये थे, जिस प्रकार का जिहाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा आपकी उम्मत ने किया उस प्रकार का जिहाद किसी भी नबी तथा उसकी उम्मत ने नहीं किया, और महा युद्ध जो आप के आने के पश्चात लड़े गए आप से पहले उसकी मिसाल नहीं मिलती।
	नबीय्युर्रह़मत	जिनको अल्लाह तआला ने समस्त लोक वासियों के लिये रह़मत बना कर भेजा था, अतः आपके द्वारा समस्त धरती वासियों पर अल्लाह तआला ने कृपा किया, मोमिनों ने इसका एक बड़ा भाग पाया, तथा कुफ्फार में से अहले किताब उसकी छत्र-छाया में रहे, एवं उनके संधि एवं वचन के अंतर्गत जीवन यापन किया।
	अल-फ़ातेह	जिनके द्वारा अल्लाह तआला ने संकीर्ण हिदायत के द्वार को पूर्णरूपेण खोल दिया, तथा आप के द्वारा, अंधी आँख, बहरे कान एवं बंद हो चुके दिलों को खोल दिया, अल्लाह तआला ने आपको काफिरों के नगर पर प्रभुत्व दिया, आपके द्वारा ही जन्नत (स्वर्ग) का द्वार खोला जाएगा, और आप के द्वारा ही अल्लाह तआला ने लाभदायक ज्ञान एवं नेक अमल (सदकर्म) के द्वार को खोला।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम

अल-अमीन

इस नाम के द्वारा नामकरण के सर्वाधिक योग्य समस्त संसार में आप ही हैं, आप अल्लाह के दीन एवं वह्य (प्रकाशना, आकाशवाणी) के अमीन (विश्वासपात्र) हैं, आप जो धरती पर है उसके भी तथा जो आसमान में है उसके भी अमीन हैं, बल्कि कुरैश के काफिरों ने आपके रसूल बनाये जाने के पूर्व ही आप का नाम अमीन (अमानतदार) रख दिया था।

बशीर

जिसने आज्ञापलन किया उसको सवाब व पुण्य की शुभ सूचना देने वाले तथा जिसने अवज्ञा किया उसको अज़ाब व दंड की चेतावनी देने वाले हैं आप।

आदम की संतान के सरदार

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**मैं क़यामत के दिन नबियों का सरदार रहूँगा परंतु इस में अभिमान करने योग्य कोई बात नहीं**"।

अल-सिराज अल-मनीर

जो बिना जलाये हुये दीप्त करने वाले तथा प्रकाश फैलाने वाले हैं, वह्हाज (अत्यंत भड़कने वाला, ज्वलनशील) के विपरीत कि इसमें एक प्रकार से जलाते हुए दीप्त करने का अर्थ पाया जाता है।

आप अब्दुल्लाह (अल्लाह के भक्त) हैं, आप भक्ति के अति विशिष्ट स्थान पर विराजमान हैं क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भक्ति के सभी मापदंड पर पूर्णरूपेण खड़े उतरते हैं।

नबी ﷺ के गुण संक्षिप्त रूप से

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे पूर्ण व मुकम्मल ख़ाका (रूपरेखा) स्वयं आपने खींचा है किः "**मैं मुहम्मद अल्लाह का बंदा और रसूल हूँ, मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे उस निश्चित स्थान से ऊपर उठा दो जहाँ अल्लाह तआला ने मुझे स्थापित किया है**"।

आप चाहे शारीरिक रचना हो अथवा आचरण एवं स्वभाव, हरेक आधार पर सर्वोत्तम पुरूष थे, अल्लाह तआला का फरमान हैः (**निःसंदेह आपके आचरण एवं स्वभाव उच्च कोटि के हैं**)। अल-क़लमः ४, तथा आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं किः "**आपके शिष्टाचार वही हैं जो क़ुरआन है**", अर्थात आप उसके अनुसार कर्म करते हैं, उसकी तय सीमा को नहीं लांघते, अल्लाह की प्रसन्नता के लिये ही प्रसन्न होते हैं तथा उसकी अप्रसन्नता के लिये अप्रसन्न होते हैं।

ख़लील-अल्लाह

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "**अल्लाह तआला ने मुझे वैसे ही अपना ख़लील (घनिष्ठ मित्र) बना लिया है जिस प्रकार उसने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लील बनाया था**"।

आप की शारीरिक रचना एवं गुण

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पवित्र शरीर

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः "**रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रंग खिलता हुआ था**" अर्थात आप ऐसे गोरे चिट्टे थे जिसमें गुलाबी रंग का मिश्रण था, "**आपका पसीना मोती के समान था, आप आगे की ओर झुक कर चलते थे, तथा मैंने किसी दीबाज**" जोकि रेशम की अति उत्तम एवं उन्नत क़िस्म है "**और न ही ह़रीर** -सामान्य रेशम- **को कभी छूआ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हथेली से अधिक नरम व मुलायम हो, न ही मैंने किसी मुश्क अथवा अंबर को सूंघा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शरीर की गंध से अधिक सुगंधित हो**"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शारीरिक रचना व गुण	
आपका क़द व डील-डोल	बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरबूअ**" अर्थातः मध्यम क़द के थे "**आप के दोनों कंधों के बीच चौड़ाई थी अर्थात आपकी छाती चौड़ी थी, आपके बाल आपकी कान पालि तक लटकती थी, मैंने आपको लाल वस्त्र धारण किये हुए देखा था उनसे अधिक सुंदर कोई चीज़ मैंने कभी नहीं देखा**"।
आपकी मुखाकृति	काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : "**जब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम किया तो ख़ुशी के कारण आपका चेहरा दमक रहा था, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब ख़ुश होते तो आपका मुख चमकने लगता मानो चाँद का टुकड़ा हो, और हम आपकी इस स्थिति को पहचान लेते थे**", और बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गयाः क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुख तलवार के समान था ? उन्होंने कहाः "**नहीं, बल्कि चंद्रमा के समान था**"।
आपके बाल	अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ भरे-भरे थे, मैंने वैसा हाथ आपके बाद किसी का नहीं देखा, एवं आपके बाल सीधे लम्बे थे घुँघराले नहीं**" अर्थात आपके बाल टेढ़े-मेढ़े और जटा के समान न थे "**और न ही बिल्कुल सीधे थे**" अर्थात बिल्कुल सपाट सीधे लटकते हुए भी नहीं थे।
आप की आँखें	जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं "**आपका मुँह ज़लीअ था**" अर्थातः कुशादा व चौड़ा "**आपके चक्षु (आँख) सफेदी में लालिमा लिए हुए थे**" तथा "**आप की एड़ी कम मांस वाली हल्की थी**"।
आप का पसीना	अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे यहाँ आए तथा आपने हमारे पास क़ैलूला किया**" अर्थात दोपहर में भोजन के पश्चात कुछ देर लेट गए "**और आपके शरीर से पसीना निकलने लगा, तो मेरी माता जी एक बोतल ले कर आईं तथा उस पसीना को एकत्र करने लगीं**" अर्थातः आपके पसीना को उस बोतल में जमा करने लगीं "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नींद से जाग गए और पूछाः हे उम्मे सुलैम, यह क्या कर रही हो ? तो उन्होंने उत्तर दिया कि आप का यह पसीना जब हम अपनी इत्रों में डालते हैं तो वह और भी सुगंधित हो जाता है, आपके पसीने की गंध सर्वाधिक सुगंधित है**"।
नबूवत की मोहर	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोनों कंधों के बीच में नबूवत की मोहर लगी हुई थी, जोकि आपके शरीर में तिल के समान बिल्कुल स्पष्ट था। जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः "**मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कंधे के पास कबूतर के अंडे के समान नबूवत की मोहर छपी हुई देखी, जो आपके शरीर से मिलता-जुलता था**"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आचरण व स्वभाव

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का आपके प्रति आदर-सम्मान

अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : "**मेरे निकट अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिक प्रिय कोई नहीं था न ही मेरी नज़र में उससे अधिक किसी के लिये आदर था, आपके आदर का यह हाल था कि मैं आपको आँख भर देख भी नहीं सकता था, यदि आप मुझसे कहें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुलिया बयान करो तो यह मेरे लिए असंभव होगा क्योंकि मैंने जी भरकर कभी आपको देखा ही नहीं**"।

हुदैबिया के दिन उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी ने क़ुरैश के समक्ष नबी के संबंध में ब्योरा देते हुए कहा था: "**अल्लाह की क़सम, मैंने किसी राजा को नहीं देखा कि उसकी प्रजा उसका वैसा आदर करती हो जैसा मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) **के साथी मुहम्मद का करते हैं, अल्लाह की क़सम आप खखारते भी हैं तो वह खखार आपके साथियों में से किसी के हाथ में गिरता है जिसको वह अपने चेहरे तथा शरीर पर मल लेते हैं, जब आप कोई आदेश देते हैं तो अतिशीघ्र उसके पालन के लिए वो दौड़ कर आते हैं, जब आप वुज़ू करते हैं तो आपके वुज़ू का पानी लेने के लिए आपस में मारा-मारी होती है, जब आप बात करते हैं तो वो लोग अपनी आवाज़ नीची कर लेते हैं, और आपके आदर में आपकी ओर नज़र उठा कर जी भर कर देखते भी नहीं हैं**"।

अल्लाह का आदर

अब्दुल्लाह बिन शिख़्खीर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "**हमने कहा आप हमारे सय्यद (सरदार, अधिपति) हैं, तो आपने फ़रमाया: सय्यद (सरदार) तो अल्लाह तबारक व तआला है, हमने कहा: आप हममें सबसे उत्तम तथा सबसे महान हैं, तो आपने फ़रमाया: (इसी प्रकार की) अपनी बातें बोलो -या इन जैसी कुछ बातें- और सावधान रहो कि शैतान कहीं तुम्हें अपने जाल में न फांस ले**"

वीरता

अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: "**जब घमासान का रण पड़ता और एक गिरोह दूसरे गिरोह से युद्ध के लिये मिलता तो हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी ढ़ाल बनाते थे, शत्रु की सेना के निकट आपसे अधिक कोई नहीं होता था**"।

अल्लाह से भय व डर

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**अल्लाह की क़सम मैं तुम्हारे मध्य अल्लाह से सर्वाधिक भयभीत होने वाला तथा उसके लिए सर्वाधिक तक़वा (इंद्रियनिग्रह) अपनाने वाला हूँ**"।

अपने घरवालों के संग दयाभाव

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**तुममें सर्वोत्तम पुरूष वह है जो अपने घरवालों के लिये सबसे उत्तम हो, और मैं तुममें से सर्वाधिक अपने परिवार वालों के लिए उत्तम हूँ**"।

लज्जा

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "**रसूलुल्लाह** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **अपने घरों में रहने वाली कुँवारी लड़की से भी अधिक लज्जावान थे, आप जब कोई अप्रिय चीज़ देखते तो इसे हम आपके चेहरे के हाव-भाव से पता कर लेते थे**"।

आपका सरल

मोमिनों की माताश्री आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब दो चीज़ों के बीच चयन का अधिकार दिया जाता तो जो दोनों में सरलतम होता आप उसे चुनते थे बशर्ते कि उसमें गुनाह न हो, और यदि वह सरलतम चीज़ गुनाह आधारित होती तो आप सर्वाधिक गुनाह से बचने वाले थे**"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आचरण व स्वभाव

अपने लिये इंतक़ाम नहीं लेते थे	आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: "**अल्लाह की क़सम आपने अपने लिये कभी किसी से इंतक़ाम (प्रतिशोध) नहीं लिया परंतु जब अल्लाह के तय किए हुए सीमाओं का उल्लंघन होने लगता तो फिर आप इंतक़ाम लेते**"।
आप खाना को दोष नहीं देते थे	आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: "**रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी खाने में दोष नहीं निकाला, यदि चाहत होती तो खा लेते और यदि नापसंद करते तो छोड़ देते**"।
आप उपहार स्वीकार करते थे	आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: "**अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उपहार स्वीकार करते थे और उसका बदला भी दिया करते थे**"।
आप सदक़ा (दान) नहीं लेते थे	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं मुहम्मद के वंशज एवं ख़ानदान के लोग सदक़ा नहीं खाते हैं**"।
आपका विनम्रता	उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक व्यक्ति लाया गया जिससे आपने बात किया तो भय के मारे वह काँपने लगा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे कहा: शांत हो जाओ, मैं कोई बादशाह नहीं हूँ, मैं भी एक ऐसी महिला का पुत्र हूँ जो धूप में सुखाए हुए मांस का भक्षण करती थी**"।
अपने परिवार वालों की सहायता करना	असवद बिन यज़ीद रहिमहुल्लाह कहते हैं कि: मैंने आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से प्रश्न किया: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में क्या करते थे ? तो उन्होंने बताया कि: "**आप अपने घर वालों का काम में साथ दिया करते थे, और जब नमाज़ का समय होता तो आप नमाज़ के लिये निकल जाते**"।
अज्ञानियों से दूरी अपनाना	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**क्या तुम लोगों को आश्चर्य नहीं होता है कि कैसे अल्लाह तआला ने क़ुरैश के गाली गलोज को मुझ से दूर कर दिया? वो किसी निंदनीय व्यक्ति को "मुज़मम्म" कह कर गाली देते एवं धिक्कारते हैं, जब्कि मैं मुहम्मद (प्रशंसनीय व सराहनीय) हूँ**"
आपकी सच्चाई	अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान किया और आप सच्चे थे जिसकी सच्चाई सर्वविदित थी।
अपने सेवकों के संग आपका व्यवहार	अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "**मैंने दस वर्ष तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा की, अल्लाह की क़सम आपने कभी मुझ से उफ्फ भी नहीं कहा, और न ही कभी जो मैंने किया उसके लिये पूछा कि: तुमने ऐसा क्यों किया? और न ही कभी जो मैंने नहीं किया उसके लिए पूछा कि: तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?**"

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आचरण व स्वभाव

अपने साथियों के बीच आप स्वयं को विशिष्ट स्थान नहीं देते थे और आप का हृदय बड़ा उदार था

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : "हम लोग मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक व्यक्ति ऊँट पर सवार हो कर आया, ऊँट को मस्जिद में बैठाया (कुछ रिवायतों में मस्जिद के द्वार पर ऊँट बांधने का भी वर्णन है) और उसको बांधने के पश्चात पूछाः तुम में से मुहम्मद कौन हैं? जब्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के बीच टेक लगा कर बैठे हुए थे, वह कहते हैं : हमने कहाः यह श्वेत आदमी जो टेक लगाकर बैठे हैं, तो उस व्यक्ति ने आपसे कहाः हे अब्दुल मुत्तलिब के पुत्र, तो रसूलुल्लाह ने उससे कहाः **मैंने तुम्हारा उत्तर दे दिया है (अब आगे बोलो), उस व्यक्ति ने कहाः हे मुहम्मद मैं आप से कुछ पूछने वाला हूँ तथा इसमें कठोरता से काम लूँगा अतः आप अपने दिल में मेरे लिये कोई बदगुमानी नही रखियेगा, तो रसूलुल्लाह ने फ़रमायाः जो कुछ पूछना है पूछो, तो उस व्यक्ति ने कहाः मैं आप को आपके रब तथा आप से पहले लोगों के रब की क़सम देता हूँ, क्या अल्लाह ने आप को समस्त संसार के लोगों के लिये रसूल (संदेष्टा) बना कर भेजा है? आपने फ़रमायाः हाँ बिल्कुल, तो उसने कहाः मैं आप को अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या अल्लाह ने आपको यह आदेश दिया है कि हम दिन व रात में पाँच समय नमाज़ पढ़ें? आप ने फ़रमायाः हाँ बिल्कुल, फिर उसने कहाः मैं अल्लाह की क़सम देकर आप से पूछता हूँ किः क्या अल्लाह ने साल के इस (रमज़ान) महीना का रोज़ा रखने का आप को आदेश दिया है? तो रसूलुल्लाह** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **ने फ़रमायाः हाँ बिल्कुल, पुनः उस व्यक्ति ने पूछाः मैं अल्लाह की क़सम देकर आप से पूछता हूँ किः क्या अल्लाह ने आप को इस बात का आदेश दिया है कि यह सदक़ा (ज़कात) हमारे धनवानों से ले कर हमारे ही निर्धनों मे बाँट दिया जाए? रसूलुल्लाह ने फ़रमायाः हाँ बिल्कुल, तो उस व्यक्ति ने कहाः आप जो लेकर आए हैं मैं उस पर ईमान लाता हूँ, और मैं अपने समुदाय का प्रतिनिधि हूँ, मैं बनू साद बिन बकर क़बीला का ज़िमाम बिन सालबा हूँ**"।

आपका खान-पान

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: "**मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरवाले कभी पेट-भर कर दो दिन तक लगातार जौ की रोटी नहीं खा सके यहाँ तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्राण पखेरू उड़ गए**"।

सांसारिक मोहमाया से दूरी

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "**मुझे यह बात पसंद नहीं है कि मेरे पास उहुद पहाड़ के समान सोना हो और उस पर तीन दिन व्यतीत हो जाने के पश्चात मेरे पास उस में से एक दिरहम भी बच जाए, हाँ यदि क़र्ज़ (ऋण) के लिए बच जाए तो बात दूसरी है, परंतु मैं कहूँगा कि अल्लाह के अमूक बंदे के लिए इतना, और अमूक के लिए इतना इतना**"। अर्थात अपने लिए कुछ भी नहीं रखूँगा।

आपने कभी गाली नहीं दी

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं किः "**आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न तो अश्लील थे और न ही गाली-गलौज करने वाले थे, न ही बाज़ारों में जा कर हुल्लड़ मचाने वाले थे, और न ही आप बुराई का बदला बुराई से देते थे, बल्कि आप क्षमा करने वाले, अनदेखी एवं माफ कर देने वाले थे**"।

आपने कभी किसी अन्य महिला के हाथ का स्पर्श नहीं किया

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं किः "**रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी भी किसी अन्य व अजनबी महिला का हाथ नहीं छूआ**"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आचरण व स्वभाव

आपका सादा घर, सांसारिक मोहमाया से दूरी एवं सादा जीवन यापन

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं किः मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया जब्कि आप एक चटाई पर लेटे हुए थे तो मैं बैठ गया, आपने अपनी लुँगी समेट कर रख ली और आप के पास उस के सिवाय और कोई वस्त्र न था, लेटे होने के कारण चटाई का निशान आपकी पीठ पर आ गया था, मेरी दृष्टि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर के आवश्यक साजो सामान पर पड़ी तो देखा कि मुट्ठी भर लगभग एक साअ (एक प्रकार का माप) के समान जौ पड़ा हुआ था, और उसी के समान कीकर (बबूल की फली) घर के एक कोने में पड़ा हुआ था, और ऊपर एक चमड़े का मश्कीज़ा लटका हुआ था। वह कहते हैं: यह देख कर मेरी आँखों में आँसू आ गए, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछाः "**हे ख़त्ताब के पुत्र, क्या चीज़ तुझे रुला रही है**?" मैंने कहाः हे अल्लाह के नबी, मैं क्यों न रोऊँ कि इस चटाई ने आपके पहलु में अपना निशान छोड़ दिया, और आप का जो साजो सामान है वह तो मैं देख ही रहा हूँ, और जब्कि यह क़ैसर व किसरा (रोम व फ़ारस वाले) हरे-भरे बाग़ एवं नदियों के बीच अपना जीवन ठाठ से व्यतीत कर रहे हैं, और आप जो अल्लाह के रसूल एवं उसके चयनित सबसे उत्तम बंदा हैं आपके साजो सामान का यह हाल है ? तो आपने फरमायाः "**हे ख़त्ताब के पुत्र क्या तुम इससे प्रसन्न नहीं हो कि उन लोगों के लिए दुनियँ हो और हमारे लिए आख़िरत हो ?**" मैंने कहाः क्यों नहीं।

प्रथम परीक्षा

सत्य	असत्य	प्रश्न:
☐	☐	❁ लोक एवं परलोक में बंदे का सौभाग्य नबी ﷺ के तरीकों का अनुसरण करने में है
☐	☐	❁ रसूल अपनी क़ौम के कुलीनतम वंश से होते थे
☐	☐	❁ आपका सबसे पूर्ण ब्योरा स्वयं आपने दिया है कि: **"मैं अल्लाह का बंदा व उसका रसूल हूँ"**।
☐	☐	❁ हरीर और दीबाज (रेशम के प्रकार) नबी ﷺ की हथेली से अधिक मुलायम थे
☐	☐	❁ अल्लाह ने अपने नबी के शिष्टाचार तथा आचरण व स्वभाव अति उच्च कोटि के बनाए हैं, और आपको ज्ञान, प्रधानता और जिसमें लोक एवं प्रलोक में सफलता, सौभाग्य एवं मुक्ति है वह सब इस प्रकार से दिया है जिस प्रकार से आपके पूर्व किसी को नहीं दिया गया।
☐	☐	❁ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मी हैं जो न पढ़ना जानते थे न लिखना, और न ही किसी इंसान ने आपको कुछ सिखाया

❁ सभी धरती वासियों में सबसे उच्च कूल के हैं : ☐ युनुस बिन मत्ता ﷺ ☐ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ﷺ

❁ आपके नामः ☐ सभी विशेषताएं हैं ☐ यह मात्र नाम भर हैं जो केवल परिचय बताते हैं ☐ ऐसे गुणों के यौगिक से बना है जो आपके पूर्ण होने एवं आपके लिए प्रशंसा को वाजिब बनाते हैं ☐ समस्त ☐ केवल पहला व तीसरा

❁ **"आप का आचरण मानो क़ुरआन ही था"** अर्थातः ☐ उसी की प्रसन्नता के लिए प्रसन्न होते थे ☐ उसी की अप्रसन्नता के लिए अप्रसन्न होते थे ☐ समस्त

❁ ख़लीलुल्लाह हैं : ☐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम ☐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ☐ सभी

❁ **"रसूलुल्लाह का रंग खिलता हुआ था"** अर्थातः ☐ गेहुँआ ☐ गोरा ☐ अत्यंत गोरा

❁ सर्वाधिक सुगंधित सुगंधः ☐ मुश्क है ☐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पसीना है

❁ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरबूअ थे, अर्थातः ☐ मध्यम क़द के थे ☐ लम्बे क़द के थे

❁ आपके नबूवत की मोहरः ☐ दोनों कंधे के बीच थी ☐ आपके शरीर से मिलती जुलती थी ☐ कबूतर के अंडे के समान थी ☐ सभी

क़ुरैश से	इस्माईल	बनू हाशिम से	किनाना	**अल्लाह ने चुना**
☐	☐	☐	☐	किनाना को . .की संतान में
☐	☐	☐	☐	क़ुरैश से
☐	☐	☐	☐	बनू हाशिम से
☐	☐	☐	☐	अपने नबी को

सकरदादा का नाम	नकरदादा का नाम	परदादा का नाम	दादा का नाम	पिता का नाम	आपका नाम	**आपकी वंशावली**
☐	☐	☐	☐	☐	☐	हाशिम
☐	☐	☐	☐	☐	☐	अब्दुल मुत्तलिब
☐	☐	☐	☐	☐	☐	अब्दुल्लाह
☐	☐	☐	☐	☐	☐	मुहम्मद
☐	☐	☐	☐	☐	☐	इस्माईल
☐	☐	☐	☐	☐	☐	इब्राहीम

अल-सिराज	अल-आक़िब	अहमद	मुहम्मद	**प्रत्येक नाम को उसकी व्याख्या से मिलाएं**
☐	☐	☐	☐	अल्लाह की सर्वाधिक प्रशंसा करने वाला
☐	☐	☐	☐	जो बिना जलाए प्रकाश देता है
☐	☐	☐	☐	अत्याधिक प्रशंसनीय गुणों से लैस
☐	☐	☐	☐	आपके बाद कोई नबी नहीं, अर्थात आप मोहर के समान हैं

डरने वाले	आचरण एवं डील-डोल वाले	जीवन-यापन के आधार पर	गंध के आधार पर	हाथ के आधार पर	**आप ﷺ थे**
☐	☐	☐	☐	☐	लोगों में सर्वोत्तम
☐	☐	☐	☐	☐	सर्वाधिक मुलायम
☐	☐	☐	☐	☐	सर्वाधिक सुगंधित
☐	☐	☐	☐	☐	सबसे अच्छे
☐	☐	☐	☐	☐	सर्वाधिक

उपहार को	सदक़ा (ज़कात) को	अपने लिए	खाने को	अल्लाह के लिए	**आप ﷺ**
☐	☐	☐	☐	☐	इंतक़ाम नहीं लेते थे
☐	☐	☐	☐	☐	इंतक़ाम लेते थे
☐	☐	☐	☐	☐	कभी दोष नहीं दिया
☐	☐	☐	☐	☐	स्वीकार करते एवं उसका बदला चुकाते
☐	☐	☐	☐	☐	स्वीकार नहीं करते थे

नबी ﷺ की सीरत

आपके वस्त्र धारण करने एवं खान-पान का ढ़ंग

आपका प्रिय रंग

आपका सबसे प्रिय रंग सफेद था, और आपने फरमायाः "**यह तुम्हारे रंगों में से सर्वश्रेष्ठ रंग है, अतः इसे पहना करो तथा इसी रंग में अपने मुर्दों व मृतकों को दफनाओ**"।

आपका वस्त्र

जो भी वस्त्र मयस्सर होता आप उसे धारण करते, कभी ऊनी, तो कभी कॉटन और कभी लेनिन का, और जब आप क़मीज़ पहनते तो दाहिनी ओर से पहनना आरंभ करते।

आपका संतुलित वस्त्र धारण करना

कुछ सलफ़ (नेक पूर्वजों) का कहना है किः (सलफ़ सालेहीन प्रसिद्धि वाले दो प्रकार के वस्त्र को मकरूह व अप्रिय समझते थे सर्वोत्तम तथा अत्यंत घटिया), और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस़ में हैः "**जिसने प्रसिद्धि वाला वस्त्र धारण किया उसे अल्लाह तआला क़यामत के दिन अपमान वाला वस्त्र पहनाएगा फिर उसमें आग भड़क उठेगी**" क्योंकि इसका धारण उसने अहंकार, गर्व एवं अभिमान के लिए किया था अतः अल्लाह तआला ने उसकी सोच के विपरीत चीज़ के द्वारा उसे दंड दिया, इस प्रकार की एक और रिवायत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ही से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**जो अपने कपड़े को घमंड के कारण घसीटते हुए चलता है क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे (रह़मत व कृपा की दृष्टि से) नहीं देखेगा**"।

आपका भोजन

जो आपके समक्ष उपलब्ध होता उसमें ना नुकुर करते हुए उसको लौटाते नहीं थे और जो नहीं होता उसके लिए तकल्लुफ़ भी नहीं करते थे, जब भी आपके सामने कोई खाना रखा गया आपने उसमें से खाया, सिवाय ऐसी चीज़ के जिसको आपकी रूह़ नापसंद करती थी तो उसे ह़राम क़रार दिए बिना छोड़ देते थे, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि "**आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी खाने में दोष नहीं निकाला, यदि चाहत होती तो खाते अन्यथा छोड़ देते**", जैसे आपने गोह (गोयरा) नहीं खाया क्योंकि यह आपके यहाँ नहीं पाया जाता था।

भोजन करने का ढ़ंग

- अधिकतर आपका खाना भूमि पर दस्तरख़्वान में रखा जाता।
- आप तीन उँगिलयों से भोजन करते थे।
- आप टेक लगा कर भोजन नहीं करते थे।
- भोजन के आरंभ में "बिस्मिल्लाह" कहते तथा अंत में "अलहम्दुलिल्लाह" कहते।
- जब आप खाने से फ़ारिग़ होते तो अपनी उँगलियों को चाटते थे।

आप का पानी पीना

- अधिकतर आप बैठ कर पानी पिया करते थे, बल्कि आपने खड़े होकर पानी पीने वाले को डांटा-फटकारा है तथा खड़े होकर पानी पीना उसी समय जायज़ है जब कोई ऐसी विवशता हो जिसके सबब बैठने में असुविधा होती हो।
- जब आप पानी पी लेते तो उसके बाद उसे देते जो आपके दाहिनी ओर होता यद्यपि आपके बाईं ओर क़ौम के बड़े लोग ही क्यों न बैठे हों।

आप के शादी-विवाह का ढ़ंग एवं वैवाहिक जीवन

- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "**तुम्हारी दुनियाँ में दो चीज़ें मुझे सर्वाधिक प्रिय हैं : महिलाएं एवं सुगंध, तथा मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में बनाई गई है**"।
- आप अपनी सभी धर्म पत्नियों के बीच रात बिताने, घर एवं ठिकाना तथा दैनिक जीवन-यापन का ख़र्चा देने में बराबरी एवं समरसता का ध्यान रखते थे।
- आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: "**जब आप यात्रा का इरादा करते तो अपनी पत्नियों के बीच क़ुरआ अंदाज़ी करते तथा जिनका नाम आता वह आपके साथ यात्रा में जातीं एवं शेष के लिये आप आपत्ति का कोई रास्ता नहीं छोड़ते थे**"।
- अपनी पत्नियों के संग आपकी सीरत यह थी कि आप उनके संग अच्छा व्यवहार करते थे और शिष्टाचार का ध्यान रखते थे।
- आप आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पीछे-पीछे आते जहाँ वह अंसार की बालिकाओं के साथ खेला करती थीं, और जब वह किसी ऐसी चीज़ की इच्छा जतातीं जो शरई रूप से वर्जित न होता तो आप उनकी इच्छा पूर्ति करते।
- आप उनकी गोद में सिर रख कर टेक लगाए हुए क़ुरआन का पाठ करते और यदा-कदा ऐसा भी होता कि उन्हें माहवारी आ रही होती।
- जब उन्हें माहवारी आ रही होती तो आप उन्हें तहबंद बांधने का आदेश देते फिर आप उनके साथ मुबाशरत (अर्थात मैथुन के सिवा आलिंगन इत्यादि) करते।
- आप रोज़े की हालत में भी अपनी पत्नियों का चुंबन लिया करते थे।
- अपने परिवार के लोगों के प्रति कृपा एवं दयालुता का यह हाल था कि आप उन्हें खेलने देते, तथा दो बार आपने उनके संग दौड़ प्रतियोगिता की तथा एक बार घर से बाहर निकलने में उनके संग प्रतिस्पर्धा किया।
- जब आप यात्रा से लौट कर आते तो रात्रि में अपने घर का द्वार नहीं खटखटाते थे और दूसरों को भी ऐसा करने से रोकते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सोने एवं जागने का ढंग

- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सोने के लिए बिस्तर पर आते तो यह दुआ पढ़तेः "**बिस्मिका अल्लाहुम्मा अह़या व अमूत (ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से जीता व मरता हूँ)**" एवं "**प्रत्येक रात्रि जब आप बिस्तर पर आते तो अपनी हथेलियों को मिलाते, तत्पश्चात उसमें फूँक मारते तथा ये सूरतें पढ़तेः ﴿قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ﴾ और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلْفَلَقِ﴾ और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ﴾ फिर जहाँ तक आपका हाथ पहुँचता यथा संभव अपने शरीर पर फेरते, अपने सिर, मुख तथा शरीर के अगले भागों से आरंभ करते, ऐसा आप तीन बार करते**", तथा "**जब आप सोने का इरादा करते तो अपने दाहिने हाथ को अपने गाल के नीचे रखते, फिर यह दुआ पढ़तेः अल्लाहुम्मा क़िनी अज़ाबका यौम तबअसु इबदाका (हे अल्लाह जिस दिन तू अपने बंदों को दोबारा उठाएगा उस दिन मुझे अपने दंड से बचा के रखना**" और आप जब निद्रा से जागते तो यह दुआ पढ़तेः "**अल्हमदुलिल्लाहिल्लज़ी अह़याना बाद मा अमातना व इलैहिन्नुशूर (समस्त प्रकार की प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए है जिसने हमें मृत्यु पश्चात पुनः जीवित किया और अंत में हमें उन्हीं की ओर लौट कर जाना है**", फिर आप मिस्वाक (दातून) करते।
- आप रात्रि के प्रथम भाग में सो जाते तथा अंतिम भाग में जाग कर क़याम करते अर्थात नमाज़ें पढ़ते और यदा-कदा मुसलमानों के हित के लिए रात्रि के प्रथम भाग में जाग कर भी रहते।
- आपकी आँखें सोती थी किंतु दिल जागता रहता था।
- जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सो रहे होते तो लोग आप को जगाते नहीं थे यहाँ तक कि आप स्वयं जाग जाएं।
- आपकी निद्रा सबसे संतुलित निद्रा होती थी, और यही ढ़ंग निद्रा के लिए सर्वाधिक लाभदायक है।

दूसरों के संग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यवहार

- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हास्य-विनोद किया करते थे किंतु प्रहास के समय भी आप सच ही बोलते थे।
- आप तौरिया किया करते थे और इस तौरिया में भी सच ही बोला करते थे। (तौरिया कहते हैं सांकेतिक शब्दों के प्रयोग को, अर्थात ऐसे वाक्य जिनका प्रत्यक्ष अर्थ कुछ हो एवं अप्रत्यक्ष कुछ और)।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मशविरा व परामर्श देते भी थे और लेते भी थे।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोगियों का हाल-चाल पूछने के लिए जाते, जनाज़ा में उपस्थित होते, न्योता स्वीकार करते, एवं विधवाओं, निर्धनों, दुर्बलों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आप सदैव तत्पर रहते।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी प्रशंसा में कही गई कविताओं का श्रवण करते और उस पर उपहार भी देते, आपकी जो भी प्रशंसा व सराहना की गई है वो सब आपमें विद्यमान ख़ूबी व अच्छाई का अंश मात्र हैं, परंतु आपके सिवा अन्य लोगों की जो प्रशंसा की जाती है उसमें अधिकतर झूठ की मिलावट होती है।
- आप अपने जूते स्वयं गाँठ लेते और कपड़ों में पैबंद लगा लेते, अपने डोल की मरम्मत कर लेते, दूध दूह लेते, अपने कपड़ों से जूँ निकाल लेते, परिवार वालों की एवं स्वयं अपनी सेवा करते, तथा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के संग मस्जिद बनाने के लिए ईंटें उठाते थे।
- कभी भूख के मारे आप अपने पेट पर पत्थर बाँध लेते और कभी पेट-भर खाना मिल जाता।
- आप अतिथि भी बनते और अतिथेय भी बनते (मेहमानी और मेज़बानी दोनों करते)।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सिर के मध्य में, पाँव के ऊपरी भाग पर, कण्ठ की नस (ग्रीवा शिरा) में एवं गर्दन के ऊपरी भाग (स्कंध) में पछना (सींघी) लगवाया।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उपचार किया, आग से दाग़ा किंतु किसी से स्वयं को दाग़ने के लिए नहीं कहा, आपने दम (झाड़-फूँक) किया किंतु किसी से स्वयं पर दम (झाड़-फूँक) करने के लिए नहीं कहा, तथा रोगियों को कष्टदायक चीज़ों से बचाया।
- व्यावहारिक रूप से आप सर्वोत्तम पुरूष थे, और जब आप क़र्ज़ लेते थे तो क़र्ज़ (ऋण) को अच्छे ढ़ंग से लौटाते थे।

आप के चलने का ढ़ंग

- आप सबसे तेज़, सबसे उत्तम तथा सबसे संतुलित चाल चलने वाले थे।
- आप अपने साथियों में सबसे तेज़ चलते थे यहाँ तक कि अन्य लोगों को आपके साथ-साथ चलने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता था।
- और आप कभी नंगे पाँव तो कभी जूता पहन कर चलते थे।
- सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम आपके आगे और उन सब के पीछे चलते थे।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के साथ अकेले भी और समूह में भी चलते थे।

अल्लाह के स्मरण का ढ़ंग

आप सर्वाधिक पूर्ण रूप से अल्लाह तआला का स्मरण व ज़िक्र करने वाले थे, बल्कि आपका सारा वार्तालाप ही अल्लाह के ज़िक्र से ओत-प्रोत होता था।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नींद से जागते तो अल्लाह का ज़िक्र करते, जब नमाज़ प्रारंभ करते, जब घर से निकलते, एवं जब मस्जिद में प्रवेश करते समय, भोर-सांझ, वस्त्र धारण करते समय, घर से निकलते और प्रवेश करते समय, शौचालय में घुसते समय, वुज़ू के पूर्व एवं पश्चात, जब अज़ान सुनते, जब चाँद देखते समय, खाने के पहले और बाद में एवं छींकते समय .... हर समय आप अल्लाह तआला का स्मरण करते रहते थे।

फ़ितरती एवं नैसर्गिक व प्राकृतिक सुन्नतें तथा उससे संबंधित चीज़ें

सुन्नतों की गणना

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**दस चीज़ें फितरत (नैसर्गिकता) में से हैं: मूँछ काटना, दाढ़ी बढ़ाना, मिस्वाक करना, नाक में पानी डालना, नाख़ुन काटना, उँगलियों के जोड़ को धोना, काँख का बाल उखाड़ना, पेड़ू (जघवास्थि) के बाल काटना तथा इस्तिंजा (मल-मूत्र त्याग के पश्चात जल प्रयोग) करना**" और रिवायत करने वाले दसवीं बात भूल गए।

दायाँ को पसंद करना

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जूता पहनने, कंघी करने, पाकी हासिल करने, लेने देने में दाहिनी ओर से आरंभ करना पसंद था, खान-पान तथा पाक होते समय आप दाहिनी ओर से प्रारंभ करते थे जब्कि शौचालय तथा इसी के समान जैसे गंदगी को दूर करते समय बाएं ओर से आरंभ करते थे। (अर्थात बाएं हाथ का प्रयोग करते थे)।

सिर मूंडना

सिर मूंडने में आपका तरीका यह था कि आप या तो पूरा मूंडते या पूरा छोड़ देते।

मिस्वाक

दातून करना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अत्यधिक प्रिय था, रोज़े की स्थिति हो अथवा बिना रोज़े की प्रत्येक स्थिति में आप दातून करते थे, नींद से जागने के पश्चात, वुज़ू के समय, नमाज़ के समय, घर में प्रवेश करते समय आप मिस्वाक करते थे, और आप दातून के रूप में पीलू की लकड़ी का प्रयोग करते थे।

सुगंध

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुगंध अत्यंत प्रिय था और आप इसका अत्यधिक प्रयोग किया करते थे।

दाढ़ी व मूँछ

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मुश्रिकीन का विरोध करो इस प्रकार से कि दाढ़ी बढ़ाओ तथा मूँछ छोटी करो।

समय सीमा

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिए मूँछ तथा नाख़ुन काटने की समय सीमा चालीस दिन तय की थी कि इससे अधिक दिनों तक हम इसे न छोड़ें**"।

बोल-चाल का ढ़ंग ...

- आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं किः "**रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम लोगों के समान जल्दी-जल्दी बात नहीं करते थे बल्कि आप बिल्कुल स्पष्ट रूप से ठहर-ठहर कर बात करते थे जिसको मज्लिस में बैठने वाला व्यक्ति याद कर सकता था**"।
- आप अधिकतर अपनी बात तीन बार दोहराते थे ताकि अच्छे से समझ में आजाए, और जब आप सलाम करते तो तीन बार सलाम करते। (अर्थात अनुमति लेने वाला सलाम)।
- बिना आवश्यकता के आप बात नहीं करते थे, और जब बात करते तो "जवामे अल-कलिम" करते अर्थात आपके कम शब्दों में अनेक अर्थ छुपे हुए होते।
- जिससे आपका संबंध नहीं होता था आप वो बात नहीं करते थे, और वही बात करते थे जिस पर सवाब (पुण्य) मिलने की आशा हो।
- आप अश्लील नहीं थे न ही गाली-गलौच करने वाले थे और न ही हुल्लड़ मचाने वाले थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बोलने-चालने, हंसने-रोने तथा भाषण देने का ढ़ंग	**आपका हंसना**	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हंसना यह था कि आप सदा बस मुस्कुराते रहते थे, और अधिक से अधिक जो आपका हंसना होता था वह यह कि आप के दाढ़ प्रकट हो जाते।
	आप का रोना	- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिसकी ले कर तथा ज़ोर-ज़ोर से नहीं रोते थे किंतु आपकी आँखों में आंसू (अश्रु) आ जाते यहाँ तक कि वह बाहर निकल जाता, और आप के सीने से बर्तन के जोश मारने के समान आवाज़ आती थी। - आपका रोना कभी मृतक पर दया के कारण होता, कभी अपनी उम्मत पर डर एवं ममता के कारण, तो कभी अल्लाह के भय से और कभी क़ुरआन सुनते समय।
	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भाषण (ख़ुत्बा) का अंदाज़	- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भूमी पर भी, मंच (मिंबर) पर भी तथा ऊँट एवं ऊँटनी सभी पर चढ़ कर ख़ुत्बा (भाषण) दिया है। - जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : "**रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब ख़ुत्बा देते तो आपकी आँखें लाल हो जातीं, आवाज़ ऊँची हो जाती तथा गुस्सा बढ़ जाता, ऐसा प्रतीत होता मानो आप किसी सेना से डरा रहे हैं**"। - आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब भी कोई भाषण देते तो उसे सर्वप्रथम अल्लाह तआला की प्रशंसा एवं सराहना से आरंभ करते। - आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब देखते कि लोगों को ख़ुत्बा की आवश्यकता है एवं उनका का हित इसमें निहित है तो किसी भी समय आप ख़ुत्बा (भाषण) दे दिया करते थे।

द्वितीय परीक्षा

गलत	सही	प्रश्न:
☐	☐	❁ आप जब क़मीज़ पहनते तो दाहिने ओर से प्रारंभ करते
☐	☐	❁ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का खाना अधिकतर भूमि पर दस्तरख़्वान बिछा कर रखा जाता था और यही आपका माइदा (खाना परोस तालिका) होता था।
☐	☐	❁ जब आप यात्रा से वापस आते तो रात्रि के समय अपने घर का दरवाज़ा नहीं खटखटाते थे और दूसरों को भी ऐसा करने से रोकते थे
☐	☐	❁ कभी भूख के कारण आप अपने पेट पर पत्थर बांध लेते थे और कभी पेट-भर भोजन भी मिल जाता था
☐	☐	❁ आप ने उपचार किया है और आग से दागा भी है किंतु स्वयं को आग से दागने के लिए किसी से नहीं कहा, आपने दम (झाड़-फूँक) किया है किंतु किसी को अपने ऊपर दम करने के लिए नहीं बोला
☐	☐	❁ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा कुछ भी नहीं किया जैसा आज कल वसवसा व शंका ग्रस्त लोग करते हैं, जैसे मूत्र विसर्जन वाले रास्ते पर हाथ फेरना ताकि पूर्णरूपेण मूत्र विसर्जित हो जाए, खांसना, उछल-कूद करना, रग पकड़ना, सीढ़ी पर चढ़ना, शिश्न में रूई डालना, उसपर पानी बहाना, हर कुछ देर के पश्चात चेक करते रहना, तथा इस जैसी और बिदअतें जिसको इन शंका ग्रस्त लोगों ने ईजाद कर रखा है
☐	☐	❁ आप आसान दीन -ए- हनीफ़ देकर भेजे गए थे, एवं इसके विरुद्ध हैं: शिर्क तथा हलाल को हराम करना
☐	☐	❁ आप की सात संतान हैं : चार पुत्रि तथा तीन पुत्र
☐	☐	❁ आपकी सभी संतान ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से हैं, उनके अतिरिक्त किसी और से आपको कोई संतान नहीं है
☐	☐	❁ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभी संतान आप से पहले मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे
☐	☐	❁ इसमें कोई दो राय नहीं कि आप नौ पत्नियों को छोड़ कर मरे थे: आइशा, हफ़सा, ज़ैनब बिन्ते जहश, उम्मे सलमा, सफ़ीय्या, उम्मे हबीबा, मैमूना, सौदा, जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हुन
☐	☐	❁ ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए अल्लाह तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम के हाथों सलाम भेजा था, और यह ऐसी विशेषता है जो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा सिवा किसी और को नहीं प्राप्त हुई

❁ आपका सर्वाधिक प्रिय रंग था: ☐ सफेद ☐ काला ☐ जो रंग भी उपलब्ध हो

❁ आपका वस्त्र होता था: ☐ ऊनी कपड़ा नहीं ☐ कॉटन तथा लेनिन ☐ जो भी वस्त्र उपलब्ध होता धारण कर लेते ☐ केवल प्रथम एवं द्वितीय

❁ आपका वस्त्र होता था: ☐ अत्यंत महंगा ☐ अत्यंत घटिया, ज़ुह्द (इंद्रिय-निग्रह) के कारण ☐ मध्यम दर्जे का

- आप बिस्मिल्लाह कहते तथा अल्लाह की प्रशंसा करते थे: ☐ भोजन के आरंभ में ☐ अंत में ☐ आरंभ एवं अंत में
- आप अधिकतर पानी पीते थे: ☐ बैठ कर ☐ खड़े हो कर ☐ दोनों
- नबी ﷺ ने फरमाया: "**मुझे तुम्हारी दुनियाँ में से दो चीज़ें अत्यंत प्रिय हैं**": ☐ महिला ☐ सुगंध ☐ दोनों।
- नबी ﷺ ने फरमाया: "**मेरी आँखों की ठंडक बनाई गई है**": ☐ जन्नत में ☐ नमाज़ में ☐ समस्त
- नबी ﷺ अपनी पत्नियों के संग अच्छा: ☐ व्यवहार करते थे ☐ आचरण ☐ समस्त
- अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिए मूँछ तथा नाख़ुन काटने के लिए ... दिन का समय सीमा तय कर दी थी**": ☐ तीस ☐ चालीस ☐ पचास
- सिर मुंडाने में आप ﷺ का तरीका यह था कि: ☐ कुछ मुंडाते कुछ छोड़ देते ☐ या तो पूरा मुंडाते या पूरा छोड़ देते
- आप मिस्वाक करना पसंद करते थे, तथा आप मिस्वाक करते थे: ☐ रोज़ा की हालत में ☐ बिना रोज़ा के भी ☐ समस्त
- आप का हंसना: ☐ सदा केवल मुस्काना भर होता था ☐ अधिकतर मुस्काते थे
- आप भेजे गए थे: ☐ समस्त लोगों के लिए ☐ इंसान तथा जिन्नों के लिए
- निर्विवाद रूप से आपकी सबसे अफ़ज़ल व उत्तम पुत्री हैं: ☐ फ़ातिमा ☐ ज़ैनब ☐ सभी
- आपकी इस पत्नी के अतिरिक्त किसी और के रज़ाई मे होते हुए आप पर वह्य (प्रकाशना) नहीं उतरी: ☐ हफ़्सा ☐ उम्मे सलमा ☐आइशा

रोगी का	विधवाओं, निर्धनों तथा दुर्बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए	न्योता	जनाज़ा में	**आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम**
☐	☐	☐	☐	हाल-चाल पूछते थे
☐	☐	☐	☐	उपस्थित होते थे
☐	☐	☐	☐	स्वीकार करते थे
☐	☐	☐	☐	सदैव तत्पर रहते थे

अपनी व अपने घरवालों की	अपने हाथों अपने जूते को	अपने हाथों अपने कपड़ा में	मस्जिद बनाने के लिए ईंट	बकरी का	**आप ﷺ के कर्म**
☐	☐	☐	☐	☐	गाँठ लेते थे
☐	☐	☐	☐	☐	पैबंद लगा लेते थे
☐	☐	☐	☐	☐	दूहते थे
☐	☐	☐	☐	☐	सेवा करते थे
☐	☐	☐	☐	☐	ढ़ोते थे

मूँछ	दाढ़ी	पेड़ू	काँख	नाख़ुन	**फितरत में से है**
☐	☐	☐	☐	☐	काटना
☐	☐	☐	☐	☐	बढ़ाना
☐	☐	☐	☐	☐	काटना
☐	☐	☐	☐	☐	उखाड़ना
☐	☐	☐	☐	☐	मूंडना

उपलब्ध को	बिना ह़राम क़रार दिए छोड़ देते थे	मगर खा लेते थे	अनुपलब्ध के लिए	**आप ﷺ का भोजन करने का ढ़ंग**
☐	☐	☐	☐	नहीं लौटाते थे
☐	☐	☐	☐	तकल्लुफ़ नहीं करते थे
☐	☐	☐	☐	कोई पवित्र चीज़ आपको पेश की जाती थी
☐	☐	☐	☐	आपका जी नहीं मानता था तो

तीन उँगलियों से	पाँचों उँगलियों से खाता है एवं हथेली से धकेलता है	एक उँगली से	एक बार खाना	जब फ़ारिग़ हो जाते	**आप ﷺ :**
☐	☐	☐	☐	☐	अपनी ... उँगलियों से खाते थे
☐	☐	☐	☐	☐	चाटते थे
☐	☐	☐	☐	☐	वह इससे अधिक प्रतिष्ठित है
☐	☐	☐	☐	☐	अहंकारी खाता है
☐	☐	☐	☐	☐	लालची एवं लालसा रखने वाला

आप ﷺ की विशेषताएं

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं

आप सहज व सरल दीन -ए- हनीफ़ देकर भेजे गए थे	इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह कहते हैं : (हनीफीया एवं समहा (सरल व सहज) दोनों को एक स्थान पर इकत्रित किया गया है क्योंकि तौहीद के मामले में हनीफीया (निश्छल) है तथा व्यवहार के मामले में सरल है, और इन दोनों का विपरीतः शिर्क तथा हलाल को हराम बनाना है)।
आप इंसानों तथा जिन्नातों के लिए भेजे गए थे	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "**(पहले के) नबी केवल अपने समुदाय के लिए भेजे जाते थे, और मैं समस्त लोगों के लिए भेजा गया हूँ**"।
आपकी किताब और दावत	अल्लाह तआला का फ़रमान हैः (**अलिफ़ लाम रा, ऐ रसूल यह वह किताब है जिसको आपके ऊपर हमने इसलिए उतारा है कि आप लोगों को अंधेरे से उजाले की ओर लाएं उनके रब के आदेश से सशक्त और प्रशंसनीय अल्लाह की ओर से**)। इब्राहीमः १।
आप की आयत (चमत्कार)	आपकी सबसे बड़ी आयत एवं चमत्कार क़ुरआन है, और आप के पूर्व जितने रसूलों और नबियों को जो भी चमत्कार दिए गए थे उसमें से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी हिस्सा मिला था।
आप से प्रेम करना दीन व धर्म है	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जबतक कि मैं उसके नज़्दीक उसकी संतान उसके पिता तथा सभी लोगों से बढ़कर प्रिय व महबूब न हो जाऊँ**"।
आप से घृणा करने का हुक्म	ऐसा व्यक्ति कुफ्र -ए- अकबर का अपराधी है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः (**निःसंदेह आप का शत्रु ही लावारिस तथा बे नामो निशान रहेगा**)। अल-कौसरः ३।
आप ख़लील थे	नबी ﷺ ने फ़रमायाः "**अल्लाह तआला ने मुझे वैसे ही से अपना ख़लील बना लिया है जैसे उसने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लील बनाया था**"।
उलुल अज़्म (साहसियों) में से एक हैं	अल्लाह तआला का फ़रमान हैः (**जब्कि हमने तमाम नबियों से वचन लिया औ -विशेष रूप से- आपसे और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरियम के पुत्र ईसा -अलैहिमुस्सलाम- से**)। अल-अहज़ाबः ७।
आपका इल्म	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "**मैं तुम सबसे अधिक अल्लाह को जानने वाला हूँ**"। और अल्लाह तआला का फ़रमान हैः (**आप कह दीजिए कि मैं न तो तुमसे यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब जानता हूँ, और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ**)। अल-अनआमः ५०।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं

आप का आज्ञापालन तथा अवज्ञा करने वाले दोनों का हुक्म

अल्लाह तआला का फ़रमान है: (**आप कह दीजिए कि यदि तुम अल्लाह से मोहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तआला तुमसे मोहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा**)। आल -ए- इमरान: ३१ । और एक स्थान पर फ़रमाया: (**तुम आलस्य न दिखाओ और न शोक मनाओ तुम ही ग़ालिब (विजेता) रहोगे यदि तुम मोमिन हो**)। आल -ए- इमरान: १३९ । और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**तुम में से प्रत्येक व्यक्ति जन्नत में प्रवेश करेगा सिवाय उसके जो इंकार करे**" सहाबा ने पूछा: अल्लाह के रसूल, कौन इससे इंकार करेगा ? "आपने फरमाया: जिसने मेरे आदेशों का पालन किया वो जन्नत में प्रवेश पाएगा तथा जिसने मेरे आदेशों की अवहेलना की उसने इंकार किया", और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया है: "**अपमान तथा अनादर उन लोगों के लिए है जो मेरे आदेशों का विरोध**

आपकी उम्मत

अल्लाह तआला का फ़रमान है: "**तुम सर्वोत्तम उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा किए गए हो कि तुम नेक बातों का हुक्म देते हो और बुरी बातों से रोकते हो एवं अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो**"। आले इमरान: ३१ । और आपने फरमाया: "**जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं उसकी क़सम मेरा अनुमान है कि तुम जन्नत वासियों की आधी आबादी होगे**"।

आपका देश

आपका देश मक्का है, अल्लाह तआला का फ़रमान है: (**अल्लाह तआला का पहला घर जो लोगों के लिए निश्चित किया गया वही है जो मक्का (शरीफ़) में है और जो समस्त संसार के लिए बरकत और हिदायत वाला है, जिसमें खुली-खुली निशानियाँ है, मक़ाम -ए- इब्राहीम है, इसमें जो आ जाए अमन वाला हो जाता है, अल्लाह तआला ने उन लोगों पर जो वहाँ तक आने में सक्षम हैं उस घर का ह़ज फ़र्ज़ क़रार दिया है, और जो कोई कुफ्र करे तो अल्लाह तआला (उससे बल्कि) तमाम दुनियाँ से बेपरवाह है**)। आले इमरान: ९६ – ९७।

और मक्का हुरमत वाला नगर है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "**अल्लाह ने जिस दिन आकाश व धरती को पैदा किया उसी दिन इस नगर को ह़राम क़रार दे दिया, अतः वह अल्लाह के ह़राम क़रार दिए जाने के कारण अब हुरमत वाला है**", और यह महाप्रलय तक मुसलमानों का देश है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "**मक्का विजय के पश्चात अब कोई हिजरत (पलायन) नहीं**"।

आप का क़िबला

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़िबला, काबा है, और इससे पहले बैतुल मक़दिस था, अल्लाह तआला का फरमान है: (**हम आपके चेहरे को बार-बार आसमान की तरफ उठते हुए देख रहे हैं, अब हम आपको उस क़िबला की ओर फेर देंगे जिससे आप प्रसन्न हो जाएं, आप अपना मुख मस्जिद -ए- ह़राम की ओर फेर लें और आप जहाँ कहीं हों अपना मुँह उसी तरफ फेरा करें**)। अल-बक़रा: १४४।

मस्जिद -ए- ह़राम प्रथम मस्जिद है जो इस धरती पर बनाई गई, अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "**मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से धरती पर बनाई गई सर्वप्रथम मस्जिद के विषय में पूछा तो आपने फरमया: वह मस्जिद -ए- ह़राम है**"।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "**जो इस घर को आया तथा न तो संभोग के क़रीब गया और न ही कोई बेहूदा हरकत की तो वह ऐसा पाक व पवित्र हो कर लौटता है जैसा माँ के पेट से पैदा होने के दिन पाक था**"।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं

आपका क़िबला

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "मस्जिद -ए- ह़राम में एक नमाज़ का सवाब अन्य मस्जिदों में एक लाख नमाज़ पढ़ने के समान, और मेरी इस मस्जिद (-ए- नबवी) में एक नमाज़ का सवाब एक हज़ार नमाज़ के सवाब के समान है, तथा बैतुल मक़दिस में पाँच सौ नमाज़ के समान"।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**केवल तीन मस्जिदों के लिए यात्रा की जाएगीः** मस्जिद -ए- ह़राम, मेरी मस्जिद (-ए- नबवी) और मस्जिद -ए- अक़्सा"।

एवं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान हैः "**जब तुम मल-मूत्र त्याग के लिए आओ तो क़िबला का सामना न करो और न ही उसे अपनी पीठ के पीछे रखो, बल्कि पूरब अथवा पश्चिम की ओर हो जाएओ**"।

(**नोटः** यह आदेश मदीना वासियों एवं उन लोगों के लिए है जिनका क़िबला दक्षिण अथवा उत्तर की और है, किंतु जिनका क़िबला पश्चिम अथवा पूरब की ओर पड़ता है उनके लिए यह आदेश है कि वह दक्षिण अथवा उत्तर की ओर मुख कर के बैठें)।

आपकी पत्नियाँ एवं सगे-संबंधी

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सात संतान थीं: चार पुत्रियां तथा तीन पुत्र

[1] क़ासिम, और इन्हीं के नाम पर आपने अपनी उपाधि अबुल क़ासिम रखी थी।

[2] ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा

[3] रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा

[٤] उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा

[5] फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा

[6] अब्दुल्लाह, और इनका लक़ब तैयब व ताहिर था।

[7] इब्राहीम, यह मारिया क़िबतीय्या जो आपकी लौंडी थी उनसे पैदा हुए थे, जब्कि आपकी अन्य सभी संतानें ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से पैदा हुई थीं, उनके अतिरिक्त किसी भी पत्नी से आपको कोई संतान नहीं थी।

आपकी सभी संतान आप के जीवन काल ही में मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे सिवाय फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के, उनकी मृत्यु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के छः महीना के बाद हुई, अल्लाह तआला ने सब्र, धैर्य तथा अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखने के कारण समस्त संसार की महिलाओं पर उनको प्रधानता दी, और निर्विवाद रूप से फ़ातिमा आपकी सबसे अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) पुत्री थीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभी पुत्रियों ने इस्लाम का युग पाया तथा इस्लाम स्वीकार किया एवं आपके संग हिजरत (पलायन) किया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग्यारह चाचा थे

[1] शहीदों के सरदार ह़मज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु

[2] अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु

[3] अबू तालिब तथा उनका नाम अब्दे मुनाफ़ था

[4] अबू लहब, तथा उसका नाम अब्दुल उज़्ज़ा था

[5] ज़ुबैर

[6] अब्दुल काबा

[7] अल-मुक़व्विम

[8] ज़िरार

[9] क़ुसम

[10]मुग़ीरा एवं उसकी उपाधि ह़जल थी

[11] अल-ग़ैदाक़, एवं उसका नाम मुसअब था

आपके चाचाओं में से ह़मज़ा और अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सिवाय किसी और ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया।

आपकी छः फूफियां थीं

[1] स़फीय्या, यह ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु की माता थीं।

[2] उम्मे हकीम अल-बैज़ा

[3] आतिका

[4] बर्रा

[5] अरवा

[6] उमैमा

आप की पत्नियां: उनके नाम का परिवर्णी (लघु रूप) حَجَزْ صَخَرْ سَمْعَهْ

हजज़ (حجز)

(ह, الحاء) = ह़फ़सा पुत्री उमर पुत्र अल-ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

(ज, الجيم) = जुवैरिया पुत्री ह़ारिस़ रज़ियल्लाहु अन्हा।

(ज़, الزاي) = ज़ैनब पुत्री जहश रज़ियल्लाहु अन्हा + ज़ैनब पुत्री ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा

स़ख़र (صخر)

(स़, الصَّاد) = स़फीय्या पुत्री हुय्यि पुत्र अख़त़ब रज़ियल्लाहु अन्हा।

(ख़, الخاء) = ख़दीजा पुत्री ख़ुवैलिद रज़ियल्लाहु अन्हा।

(र, الراء) = उम्मे ह़बीबा रमला पुत्री सुफियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

समआह (سمعه)

(स, السين) = सौदा पुत्री ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा।

(म, الميم) = मैमूना पुत्री ह़ारिस़ रज़ियल्लाहु अन्हा।

(आ, العين) = आइशा पुत्री अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

(ह, الهاء) = उम्मे सलमा हिन्द पुत्री अबू उमैया रज़ियल्लाहु अन्हा।

ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सर्वप्रथम धर्म पत्नी ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद क़ुरशीय्या असदीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा थीं, आपने उनसे नबूवत मिलने के पूर्व ही विवाह किया था जब उनकी आयु चालीस वर्ष थी, और उनके जीवन काल में आपने किसी अन्य महिला से विवाह नहीं किया, एवं आपकी सभी संतान उन्हीं से उत्पन्न हुईं सिवाय इब्राहीम के, यह वही हैं जिन्होंने नबूवत मिलने के पश्चात आपकी बड़ी सहायता की और आपके हर सुख-दुःख में आपके साथ रहीं एवं अपनी जान तथा माल आप पर न्योछावर कर के आप को तसल्ली व संतोष दिलाती रहीं, अल्लाह तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम के हाथों आपको अपना सलाम भेजा था, यह ख़दीजा की ऐसी विशेषता है जो आपकी अन्य किसी और पत्नी को प्राप्त नहीं हुई, और आपकी मृत्यु हिजरत (पलायन) के तीन वर्ष पूर्व हुई।

सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा

ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की मृत्यु के कुछ दिन बीत जाने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सौदा बिन्त ज़मआ क़ुरशीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह किया, यही वह महान महिला हैं जिन्होंने अपनी बारी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे दिया था।

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा	उनके पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मे अब्दुल्लाह आइशा सिद्दीक़ा बिन्त सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह रचाया जिनके सतीत्व की गवाही सातों आसमान के ऊपर से उतरी, यह आपको अत्यंत प्रिय व चहेती थीं, आप से विवाह रचाने के पूर्व ही फरिश्तों ने इसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष रेशम के कपड़े में लपेट कर दिखाते हुए कहा थाः "**यह आप की पत्नी हैं**", आपने इन से शव्वाल मास में विवाह किया था जब्कि उनकी उम्र मात्र छः साल थी, और उनका गौना हिजरत के प्रथम वर्ष शव्वाल में हुआ जब उनकी आयु नौ वर्ष हो चुकी थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनके अतिरिक्त किसी अन्य कुँवारी लड़की से विवाह नहीं किया, और इनके सिवा किसी और पत्नी की रज़ाई में होते हुए आप पर वह्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) नहीं उतरती थी, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकट सभी प्राणियों से अधिक प्रिय थीं, आपकी पाकदामनी (सतीत्व) आकाश से अवतरित हुई, एवं उम्मत इस बात पर निर्विवाद रूप से एक मत है कि अब जो आप पर व्यभिचार का लांछन लगाए वह काफिर है, यह आपकी पत्नियों में सर्वाधिक समझदार तथा ज्ञानी महिला थीं, बल्कि निर्विवाद रूप से यह इस उम्मत की समस्त महिलाओं में सबसे अधिक समझदार तथा ज्ञानी महिला हैं, बड़े-बड़े व आदरणीय सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम उनसे फतवा पूछा करते थे तथा उनकी राय स्वीकार करते थे।
हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा	इनके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हफ़सा बिन्त उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह रचाया, उन्होंने अपने पहले पति ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा अल-सहमी के संग ही इस्लाम स्वीकार कर लिया था एवं उनके संग ही हिजरत कर के मदीना आ गई थीं, किंतु ग़ज़वा -ए- उहुद के पश्चात जब उनके पति का स्वर्गवास हो गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे विवाह किया।
ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा	इनके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा बिन हारिस क़ैसिय्या रज़ियल्लाहु अन्हा जो बनू हिलाल बिन आमिर क़बीला से संबंध रखती थीं उनसे विवाह किया, इनसे विवाह के दो माह बाद ही इनका स्वर्गवास हो गया, यही वह महिला हैं जिनकी उपाधि उम्मुल मसाकीन (निर्धनों एवं फ़क़ीरों की माता) है।
उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा	इनके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिन्द बिन्त अबू उमैया क़ुरशीय्या मख़ज़ूमिय्या रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की, तथा अबू उमैया का नामः हुज़ैफ़ा बिन मुग़ीरा था, आपकी धर्म पत्नियों में सबसे अंत में स्वर्गवासी होने वाली यही हैं, आपकी मृत्यु हिजरत के बासठवें साल में हुई।
जुवैरीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुवैरीय्या बिन्त हारिस बिन अबू ज़िरार मुस्तलिक़ीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की जोकि बनू मुस्तलिक़ की बंदियों में से थीं, यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अपनी आज़ादी के लिए तय किए गए धन अदा करने में सहायता माँगने के लिए आई थीं तो आपने उनकी ओर से वह तय शुदा धन राशि अदा कर दी एवं उनसे विवाह कर लिया।

ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा

इनके पश्चात आपने ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह रचाया जो बनू असद बिन ख़ुज़ैमा नामक क़बीला से संबंध रखती थीं, यह आपकी फूफी उमैमा की पुत्री थीं, और इन्हीं के विषय में यह आयत उतरी थीः (**जब ज़ैद -रज़ियल्लाहु अन्हु- ने उनसे अपनी आवश्यकता पूरी कर ली तो हमने उसे आपके निकाह़ मे दे दिया**)। अल-अह़ज़ाबः ३७ ।, और इसके कारण वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अन्य पत्नियों पर गर्व किया करती थीं और कहती थीं किः "**तुम्हारा विवाह तुम्हारे परिवार वालों ने कराया है जब्कि मेरा विवाह अल्लाह तआला ने सातों आसमान के ऊपर से कराया है**"।

आपकी विशेषताओं में से यह है कि आपका वली (अभिभावक) स्वयं अल्लाह था जिसने सातों आसमान के ऊपर से आपका विवाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तय किया, आपकी मृत्यु उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफत व शासनकाल के आरंभिक दौर में हुई, पहले आप ज़ैद बिन ह़ारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु के संग विवाही गई थीं जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना मुँहबोला बेटा (दत्तक पुत्र) बना लिया था. जब ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको तलाक़ दे दिया तो अल्लाह तआला ने आपका विवाह उनसे करा दिया ताकि यह उम्मत के लिए अपने दत्तक पुत्रों की पत्नियों से विवाह करने का एक उदाहरण बन जाए।

उम्मे ह़बीबा रज़ियल्लाहु अन्हा

इनके पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मे ह़बीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की, उनका नाम रमला बिन्त अबू सुफ़ियान स़ख़्र बिन ह़र्ब क़ुरशीय्या उमवीय्या था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे ह़ब्शा (इथोपिया Ethopia) की धरती पर विवाह किया था जहाँ वह हिजरत करके गई थीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से उनका मुह़्र नज्जाशी ने चार सौ दीनार अदा किया था, तत्पश्चात वह वहाँ से आपके पास मदीना लाई गईं, और अपने भाई मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के शासनकाल में मृत्यु को प्राप्त हुईं।

स़फ़ीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स़फ़ीय्या बिन्त हुय्यि बिन अख़्तब बनू नज़ीर क़बीला के सरदार जो मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हारून बिन इमरान की संतान में से थे, उनसे विवाह रचाया, इस प्रकार वह एक नबी की पुत्री तो दूसरे नबी की पत्नी हुईं, आप संसार की सर्वाधिक सुंदर महिलाओं में से एक थीं, यह क़ैद हो कर आपकी लौंडी बन गई थीं तो आपने उन्हें स्वतंत्र कर दिया और उनकी स्वतंत्रता ही उनकी मुह़्र ठहरी, और अब इसके बाद आज़ादी को मुह़्र क़रार देना सुन्नत बन गई।

मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा

उनके पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मैमूना बिन्त ह़ारिस़ हिलालीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की, यह सबसे अंतिम महिला थीं जिनसे आपने विवाह रचाया, आपने उनसे उमरा -ए- क़ज़ा से ह़लाल होने के पश्चात मक्का में शादी की थी।

इसमें कोई दो राय नहीं कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु हुई तो आपकी नौ पत्नियां जीवित थीं, आपकी मृत्यु पश्चात सर्वप्रथम मृत्यु को प्राप्त होने वाली आपकी पत्नियों में से ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा थीं जिनकी मृत्यु सन २० हिज्री में हुई, तथा सबसे अंत में वफ़ात पाने वाली आपकी पत्नी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जिनकी मृत्यु सन ६२ हिज्री में यज़ीद बिन मुआविया के शासन काल में हुई।

पाठ दो: नबी ﷺ की सीरत

पहला अध्याय: नबूवत मिलने के पूर्व

आप का जन्म	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ील (हाथी वाली घटना) वाले साल हिजरत से ५३ वर्ष पूर्व रबीउल अव्वल के महीना में सोमवार के दिन मक्का मैं पैदा हुए जोकि ईस्वी वर्ष के अनुसार ५७१ ईस्वी था। (हाथी वाली यह घटना तथा अल्लाह तआला का उसे रोक देना यह अल्लाह तआला की ओर से अपने घर (काबा) तथा अपने नबी के लिए एक भूमिका के रूप में थी।)	
पिता	अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी अपनी माता के गर्भ ही में थे कि आपके पिता का देहांत हो गया, परिणामस्वरूप आप यतीम (अनाथ) पैदा हुए।	
माता	आमिना बिन्त वहब जो बनू ज़ुहरा क़बीला से थीं, अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आयु सात वर्ष की भी नहीं हुई थी कि आपकी माता जी भी चल बसी।	
लालन-पालन	आपकी माता के मृत्यु पश्चात आपका लालन-पालन आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने किया, और अभी आपकी आयु लगभग आठ वर्ष की हुई कि आपके दादा का भी देहांत हो गया, तत्पश्चात आपका पालन-पोषण आपके सगे चाचा अबू तालिब ने किया जिनका मूल नाम अब्द -ए- मुनाफ़ था।	
आपको दुग्धपान कराने वाली महिलाएं	सुवैबा	यह अबू लहब की लौंडी (दासी) थी, इसने आपके साथ अबू सलमा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद मख़ज़ूमी को भी दूध पिलाया था और उनको यह दूध उनके बेटे मसरूह के पैदा होने के कारण उतरा था, औ इन दोनों के साथ-साथ उन्होंने आपके चाचा हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु को भी दुग्धपान कराया था।
	हलीमा सादिया	इन्होंने अपने बेटे अब्दुल्लाह के जन्म के कारण उत्पन्न होने वाला दूध आपको पिलाया था, और अब्दुल्लाह, उनैसा और जुज़ामा -इन्हीं का नाम शैमा भी था- के भाई हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन रिफ़ाआ सादी की संतान में से थे, और आपके साथ-साथ उन्होंने आपके चचेरे भाई अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु को भी दूध पिलाया था।
आपको अपने गोद में खेलाने वाली महिलाएं	आपकी माता आमिना	अबू लहब की लौंडी सुवैबा	हलीमा बिन्त अबू ज़ुऐब सादिया
	शैमा	यह हलीमा सादिया की पुत्री तथा आपकी दूध शरीक बहन थीं, यह वही हैं जो हवाज़िन के प्रतिनिधि मंडल में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई थीं तो आपने इनका आदर करते हुए अपना चादर बिछाकर उस पर इन्हें बैठाया था।

आपको अपने गोद में खेलाने वाली महिलाएं

उम्मे ऐमन

इनक नाम बरका अल-ह़बशीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा है, यह आपकी दाई थीं जिन्हें आप ने अपने पिता की ओर से उत्तराधिकार (विरासत) में पाया था।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनका विवाह अपने प्रिय ज़ैद बिन ह़ारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु से कराया था तो उनसे उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा पैदा हुए।

यही वह महिला हैं जिनके पास नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु पश्चात अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा आए तो देखा कि वह रो रहीं हैं, तो उन दोनों ने पूछाः क्यों रो रही हो? क्या अल्लाह के पास जो है वह उसके रसूल के लिए यहाँ से बेहतर नहीं है? तो उन्होंने कहाः (मैं जानती हूँ कि अल्लाह के पास जो है वह उसके रसूल के लिए बेहतर है, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस स्थिति में थे उससे बेहतर स्थिति में पहुँच चुके हैं, किंतु मैं तो इस लिए रो रही हूँ कि आसमान से वह्य (प्रकाशना) का सिलसिला समाप्त हो गया!!) यह सुनना था कि वह दोनों भी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे।

आपके कार्य

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बकरियां चराईं, जो सब्र (धैर्य), दुर्बलों के ऊपर दया भाव एवं उनकी देख-भाल करने जैसे गुण आपके अंदर पाए जाने का एक बड़ा कारण बना।
आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**अल्लाह तआला ने जितने भी नबी भेजे सभी ने बकरियां चराईं**" सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछाः क्या आपने भी? आपने फ़रमायाः "**हाँ, मैं चंद क़रारीत़ (पैसों) के बदले मक्का वासियों की बकरियां चराया करता था**"।

व्यापार एवं विवाह

जब आपकी आयु २५ वर्ष हुई तो आप व्यापार के लिए शाम (सीरीया) गए, और बुस़रा जाकर वापस लौटे, वहाँ से लौटने के पश्चात ही आप की पहली पत्नी ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद रज़ियल्लाहु अन्हा से आपने विवाह किया।

काबा का पुनर्निर्माण

जब आपकी उम्र ३५ साल हुई तब तक काबा की दीवार जर्जर व क्षीण हो चुकी थी और किसी भी क्षण गिर सकती थी यह देख कर क़ुरैश ने इसके पुनर्निर्माण का इरादा बनाया, क़ुरैश के सभी क़बीला के लोगों ने निर्माण के लिए एक-एक किनारा बाँट लिया, निर्माण जब ह़जर -ए- असवद तक पहुँचा तो इस बात को लेकर झगड़ा होने लगा कि इसको उठा कर इसके अपने निश्चित स्थान पर कौन रखेगा? ऐसा करते हुए चार या पाँच दिन बीत गए, फिर वो इस बात पर सहमत हो गए कि सर्वप्रथम काबा में जो प्रवेश करेगा वह इस झगड़ा का समाधान निकालेगा, सौभाग्यवश काबा में सर्वप्रथम दाख़िल होने वाले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे अतः उन्होंने आपको अपना फैसला करने का अधिकार दिया, आपने एक चादर मंगाया तथा उसमें हजर -ए- असवद रखा और हरेक क़बीला को एक किनारा पकड़ कर उठाने के लिए कहा यहाँ तक कि जब वह अपने उचित स्थान तक उठा लिया गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हाथों से उसे उसकी जगह स्थापित कर दिया।

आपका एकांतप्रिय होना

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं किः "**आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एकांत प्रिय थे, अर्थात आप ग़ार -ए- ह़िरा में एकांत में चले जाते और कई-कई रातों तक इबादत करते रहते**" और नैसर्गिक रूप से आपके दिल में मूर्तियों तथा अपने समुदाय द्वारा अपनाए हुए धर्म से घृणा हो गई थी, आपके निकट इससे घृणित चीज़ कोई और नहीं थी।

दूसरा अध्याय: वह्य का आरंभ

जब आपकी आयु ४० वर्ष हुई तो आपके ऊपर नबूवत का सूर्य उदय हुआ और अल्लाह तआला ने सोमवार के दिन रसूल बना कर आपको सम्मानित किया।

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि: "**वह्य का प्रारंभ आपके नींद में सच्चे सपनों से हुआ, आप जब भी कोई सपना देखते थे तो वह भोर के उजियारे के समान सही व सच्चा साबित होता, फिर आप एकांत प्रिय हो गये, कई-कई रातें आप ग़ार -ए- हिरा में एकांतवास में इबादत करते हुए बिता देते, जब तक घर आने का दिल नहीं करता अपना तोशा (पाथेय) लिए हुए वहीं रहते, तोशा समाप्त होने पर अपनी पत्नी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आते तथा फिर तोशा ले कर वहीं चले जाते, यहाँ तक कि ग़ार -ए- हिरा में ही आपको सत्य का ज्ञान हुआ और आप पर प्रकाशना हुई, आपके पास फरिश्ता आया और कहा: पढ़िए, आपने कहा: मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं कि: फिर फरिश्ते ने मुझे पकड़ कर ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहा: पढ़िए, आपने कहा: मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं कि: फिर फरिश्ते ने मुझे पुन: दोबारा पकड़ कर ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहा: पढ़िए, आपने कहा: मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं कि: फिर फरिश्ते ने मुझे पकड़ कर तीसरी बार ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहा:** ﴿ٱقۡرَأۡ بِٱسۡمِ رَبِّكَ ٱلَّذِي خَلَقَ ١ خَلَقَ ٱلۡإِنسَٰنَ مِنۡ عَلَقٍ ٢ ٱقۡرَأۡ وَرَبُّكَ ٱلۡأَكۡرَمُ ٣﴾[العلق]، **(अपने रब के नाम से पढ़िए जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को रक्त के लोथड़े से पैदा किया, आप पढ़ते रहिए आपका रब बड़ा करम वाला है), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह आयतें सुन कर घर लौटे और इस अनोखी घटना से आप काँप रहे थे, आप ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए तथा कहा: मुझे कम्बल ओढ़ा दो, मुझे कम्बल ओढ़ा दो, लोगों ने आप को कम्बल ओढ़ा दिया यहाँ तक कि जब आपका भय समाप्त हो गया तो आपने ख़दीजा से बात की और उन्हें इस घटना से अवगत कराया और कहा: मुझे अपनी जान का ख़तरा लग रहा है, तो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ढाढस बंधाते हुए कहा: अल्लाह की क़सम कदापि ऐसा नहीं होगा कि अल्लाह आपको अपमानित करेगा, आप सगे-संबंधियों से मेल-मिलाप रखते हैं, दुर्बलों का बोझ उठाते हैं, निर्धनों को कमा कर खिलाते हैं, आप अतिथि का सत्कार करते हैं, विपत्ति में फंसे हुए लोगों की सहायता करते हैं।**

ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आपको लेकर वरक़ा बिन नौफल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा जो ख़दीजा के चचेरे भाई थे के पास आईं, और वरक़ा ऐसे आदमी थे जिन्होंने जाहिलीयत (अंधकार) वाले युग में ईसाई धर्म अपना लिया था, और किताब को इबरानी भाषा में लिखा करते थे इस प्रकार से इंजील को इबरानी भाषा में जितना अल्लाह तौफ़ीक़ देता उतना नक़ल करने का काम किया करते थे, अत्याधिक बूढ़ा हो जाने के कारण वह अंधे हो गए थे, ख़दीजा ने उनसे कहा: हे मेरे चचेरे भाई, थोड़ा अपने भतीजे की बात सुन लीजीए, तो वरक़ा ने आपसे कहा: हे मेरे भतीजे तुम क्या देखते हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ देखा था समस्त वृत्तांत सुना दिया, तो वरक़ा ने आपसे कहा: यह वही नामूस (आदरणीय भेदी फरिश्ता) है जिसको अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था, हाय मैं उस समय जवान होता, काश मैं उस समय जीवित होता जब आपकी क़ौम आपको यहाँ से निकालेगी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आश्चर्य से पूछा: क्या वो मुझे सच में निकालेंगे? उसने कहा: हाँ, जिस चीज़ को ले कर आप आए हैं उसको लेकर जो भी नबी आए उनकी

आपकी नबूवत	**क़ौम ने उनसे दुश्मनी की, यदि मुझे आपका ज़माना मिल जाए तो मैं आपकी भरपूर सहायता करूँगा, फिर कुछ दिन के बाद वरक़ा की मृत्यु हो गई तथा वह्य का सिलसिला बंद हो गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: मैं रास्ते में जा रहा था कि अचानक आकाश से एक आवाज़ सुनी जब मैंने ऊपर की ओर देखा तो वही फरिश्ता आकाश एवं धरती के बीच कुर्सी पर बैठा हुआ दृष्टिगोचर हुआ जो हिरा में आया था, मैं उससे डर गया, और लौट कर आया तथा कहा: मुझे कम्बल ओढ़ाओ, मुझे कम्बल ओढ़ाओ, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी: (हे कपड़ा ओढ़ने वाले, खड़ा हो जा और डरा) से लेकर (तथा मलीनता को त्याग दे) तक** (अल-मुद्दस्सिर: १-५) **इसके बाद वह्य का मामला आगे बढ़ा और निर्बाध वह्य उतरने लगा**"।
वह्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) की श्रेणी	
[1] सपना	वह्य (प्रकाशना) का आरंभ इसी प्रकार हुआ, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: "**आप जब भी कोई सपना देखते तो सुबह की रौशनी की तरह वह सच्चा हो कर सामने आ जाता**"।
[2] मन में डालना	फरिश्ता आपके दिल एवं मस्तिष्क में बिना सामने आए डाल देता था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "**रूहुल अमीन (जिब्रील) ने मेरे मन-मस्तिष्क में डाल दिया और मुझे सूचना दी कि ...**"।
[3] फरिश्ते का मानव रूप धारण करना	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**फरिश्ता कभी-कभी मेरे पास मानव के रूप में आता है तथा मुझसे बात करता है, तो वह जो कहता है मैं उसको अंगीकार कर लेता हूँ**", इस रूप में फरिश्ता को कभी-कभी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी देख लिया करते थे।
[4] झंकार, घरघराहट	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**कभी-कभी मेरे पास वह्य घंटी (की झंकार) के समान अवतरित होती है, यह मेरे लिए सबसे कठिन होता है, जब तक वह समाप्त होता है तब तक उन्होंने जो कुछ मुझ से कहा होता है मैं याद कर चुका होता हूँ**", और आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि: "**मैंने अत्यंत ठंड के दिनों में आप पर वह्य उतरते देखा है, जब वह समाप्त होता तो आपके ललाट पर पसीना बह रहा होता**", बल्कि यदि आप सवार होते तो आपकी सवारी उस बोझ के कारण बैठ जाती थी।
[5] फरिश्ता अपने स्वाभाविक रूप में	आप फरिश्ता को उस रूप में भी देखते थे जिस रूप में उसे पैदा किया गया है, अल्लाह जो वह्य करना चाहता उसे वह आप तक पहुँचा देते, ऐसा आपके साथ दो बार हुआ जैसा कि सूरा नज्म में अल्लाह ने इसका उल्लेख किया है।
[6] अल्लाह की ओर से प्रत्यक्ष वह्य	इसका उदाहरण वह है जो सातों आसमान के ऊपर प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह तआला ने मेराज की रात में आप पर नमाज़ फ़र्ज़ करने इत्यादि से संबंधित वह्य की थी।
[7] अल्लाह का आप से बात करना	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह तआला ने वैसे ही बिना किसी वास्ता व माध्यम के (मेराज वाली रात में) वार्तालाप किया जैसा मूसा अलैहिस्सलाम से किया करता था।

सर्वप्रथम आप पर अवतरित होने वाली वह्य

सर्वप्रथम आप पर सूरह अलक़ की प्रारंभिक पाँच आयतें (श्लोक) उतरीं: ﴿ٱقۡرَأۡ بِٱسۡمِ رَبِّكَ ٱلَّذِي خَلَقَ ١ خَلَقَ ٱلۡإِنسَٰنَ مِنۡ عَلَقٍ ٢ ٱقۡرَأۡ وَرَبُّكَ ٱلۡأَكۡرَمُ ٣ ٱلَّذِي عَلَّمَ بِٱلۡقَلَمِ ٤ عَلَّمَ ٱلۡإِنسَٰنَ مَا لَمۡ يَعۡلَمۡ ٥﴾ **(पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया, तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करीम है, जिसने क़लम के द्वारा (इल्म) सिखाया, जिसने इंसान को वह सिखाया जिसको वह नहीं जानता था)।** अल-अलक़: १-५।

आपके दावत की श्रेणी

[1] नबूवत

[2] सगे संबंधियों को डराना

[3] अपने समुदाय को डराना

[4] उस क़ौम को डराना जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया था, और इससे अभिप्राय समस्त अरब हैं।

[5] हरेक उस इंसान व जिन्नों को डराना जिनको क़यामत तक आपकी दावत पहुँचेगी।

दावत का चरण

[1] **गुप्त एवं छिप्त दावत:** यह नबूवत के प्रारंभिक तीन वर्षों तक चली।

[2] **खुली दावत:** जब आपको इसका आदेश दिया गया: **(आप उस आदेश को जो आपको दिया जा रहा है खोल कर स्पष्ट रूप से सुना दीजिए)।** अल-हिज्र: ९४।

सर्वप्रथम ईमान लाने वाले

पुरूषों में: अबू बकर सिद्दीक़।

महिलाओं में: ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद।

बच्चों में: अली बिन अबू तालिब।

आज़ाद किए जा चुके सेवकों में: ज़ैद बिन ह़ारिसा।

सेवकों मे : बिलाल बिन रबाह़ अल-ह़बशी।

जिन लोगों ने प्रारंभिक दौर में इस्लाम स्वीकार किया

आप पर प्रारंभिक दौर में ईमान लाने वाले जिन लोगों का हम उल्लेख कर चुके हैं उनके अतिरिक्त आपके घर वालों ने इस्लाम स्वीकार किया फिर उसमान बिन अफ़्फ़ान, त़लह़ा बिन उबैदुल्लाह, ज़ुबैर बिन अव्वाम, साद बिन अबी वक़्क़ास, अब्दुर्रह़मान बिन औफ़, ख़ब्बाब बिन अरत्त, सुहैब रूमी, अम्मार बिन यासिर उनकी माता सुमैया, अबू उबैदा आमिर बिन जर्राह़, उस़मान बिन मज़ऊन, अबू सलमा बिन अब्दुल असद एवं उतबा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इस्लाम स्वीकार किया।

तीसरा अध्याय: मक्की काल

मुश्रिकीन का नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को कष्ट पहुँचाना

मुश्रिकीन ने जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत की सच्चाई तथा लोगों को उसे स्वीकार करते हुए देखा तो आपको कठोर से कठोरतम पीड़ा देना आरंभ किया, मुश्रिकीन द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिए जा रहे पीड़ा के कुछ रूप निम्नांकित हैं:

- आपकी ओर से यह झूठ फैलाना कि आप जादूगर हैं ताकि लोगों के मन में आपके प्रति घृणा एवं डर उत्पन्न किया जा सके।
- आपकी ओर से यह झूठ फैलाना कि आप पागल हैं ताकि लोग आपको मूर्ख समझें।
- आपकी ओर से यह झूठ फैलाना कि आप झूठे हैं, और इसका खंडन इस बात से हो जाता है कि आप उनके बीच अपनी सच्चाई एवं अमानतदारी के कारण अमीन (अमानतदार) के नाम से प्रसिद्ध थे।
- आपका तथा जो शरीअत लेकर आप आए थे उसका उपहास बनाना।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब लोगों को दावत देने के लिए जाते तो वो लोग शोर और हल्ला मचाते ताकि लोगों को वह्य और जो हक़ (सत्य) लेकर आप आए हैं उसे सुनने से रोक दें।
- मक्का से बाहर के लोग जो उमरा या हज के उद्देश्य से आते उनका स्वागत करना तथा उनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातों को सुनने से रोकने का प्रयास करना।
- आपको शारीरिक पीड़ा देना जैसे उक़बा बिन अबू मुऐत ने किया था कि एक बार आपके गले में कपड़े का फंदा डाल कर इतने ज़ोर से खींचा कि ऐसा लगा मानो आपके प्राण पखेरू उड़ने वाले हैं यहाँ तक कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको आप से दूर किया, इसी प्रकार से आपके ऊपर ऊँट की ओझड़ी डाल दी गई थी जिसे आपकी पुत्री फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने साफ किया।
- आपको क़त्ल करने का प्रयास करना, चुनाँचे इसी उद्देश्य से उन्होंने आप के चाचा अबू तालिब के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बदले में वो लोग अबू तालिब को उमारा बिन वलीद दे दें और वो लोग आपको क़त्ल कर दें, इसी प्रकार हिजरत के समय भी उन लोगों ने आपको जान से मारने का प्रयास किया था।
- दुर्बल व कमज़ोर मोमिनों को कठोर से कठोरतम पीड़ा देना जैसे वो लोग बिलाल के पेट पर पत्थर रख देते थे, और जिस प्रकार का अमानवीय व्यवहार वो अम्मार बिन यासिर एवं उनके परिवार वालों के संग किया करते थे वह जग जाहिर है, रज़ियल्लाहु अन्हुम।

हबशा (इथोपिया) की ओर हिजरत (पलायन)

जब मुस्लिमों की संख्या बढ़ने लगी तथा कुफ्फार उनसे डरने लगे तो उनका अत्याचार और उपद्रव और बढ़ गया, यह सब देख कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें हबशा की ओर हिजरत (पलायन) करने की अनुमती दे दी, और फ़रमाया: "**उस देश का राजा एक ऐसा व्यक्ति है जिनके समक्ष लोगों पर अत्याचार नहीं हो सकता**"।

पहली हिजरत हबशा की ओर

पहली हिजरत

इस हिजरत में बारह (१२) पुरूष तथा चार (४) महिलाएं थी, जिनमें उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, सर्वप्रथम वह तथा उनकी धर्म पत्नी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी रुक़ैया निकले, हबशा में वो लोग बड़े ही अच्छे ढंग से जीवन-यापन करने लगे, फिर उनको यह सूचना मिली कि क़ुरैश ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है जब्कि यह सूचना झूठी थी, यह सुन कर वो लोग मक्का लौट आए, और यहाँ आकर पता चला कि स्थिति पहले की तुलना में अधिक पीड़ादयक है तो कुछ लोग वहीं से लौट गए और कुछ लोग नगर में प्रवेश कर गए तो उन्हें क़ुरैश की ओर से अत्यंत कष्टों का सामना करना पड़ा, नगर में प्रवेश करने वाले लोगों में से अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे।

दूसरी हिजरत

दूसरी हिजरत में तिरासी (८३) पुरूष तथा अट्ठारह (१८) महिलाओं ने हबशा की ओर प्रस्थान किया, वे लोग नज्जाशी के पास बड़ी अच्छी स्थिति में ठहरे रहे, जब यह बात क़ुरैश को पता चली तो उन्होंने अम्र बिन आस एवं अब्दुल्लाह बिन अबू रबीआ को एक गिरोह के संग भेजा ताकि नज्जाशी के हृदय में साम दाम दंड भेद किसी भी प्रकार से मुसलमानों के प्रति घृणा उत्पन्न कर दें, किंतु अल्लाह तआला ने उनकी चाल को उन्हीं पर पलट दिया।

हमज़ा व उमर का इस्लाम स्वीकार करना

नबूवत के छठे वर्ष हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया, जो क़ुरैश के सबसे शक्तिशाली व्यक्तियों में गिने जाते थे, इस प्रकार अल्लाह तआला ने उनके द्वारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमलुल्लाह को ताकत दी, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं की बरकत से उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इसलाम स्वीकार कर लिया और तब जाकर क़ुरैश के अत्याचार का सिलसिला थमा।

अबू तालिब की घाटी में

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रति क़ुरैश का अत्याचार बढ़ता ही गया यहाँ तक कि उन्होंने आपको अपने परिवार वालों समेत अबू तालिब की घाटी में तीन वर्ष तक क़ैद कर दिया, इसी घाटी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का जन्म हुआ, काफिरों को आपसे बड़ा दुःख पहुँचा और अंततः आप उस घिराव से बाहर निकले, और उस समय आपकी आयु ४९ वर्ष हो चुकी थी।

अबू तालिब एवं ख़दीजा की मृत्यु

इसके कुछ महीना बीत जाने के बाद आपके चाचा अबू तालिब का ८७ वर्ष की आयु में देहांत हो गया, उसके कुछ ही दिनों के पश्चात ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का भी स्वर्गवास हो गया, अब काफिरों का अत्याचार और बढ़ गया।

आपका ताइफ़ जाना

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ैद बिन हारिसा के संग अल्लाह की ओर दावत देने के लिए ताइफ़ गए, वहाँ आप कुछ दिन ठहरे रहे किंतु उन लोगों ने आपकी दावत को स्वीकार नहीं किया, बल्कि आपको कष्ट देकर वहाँ से निकाल दिया, आपको पत्थरों से मारा यहाँ तक कि आपके दोनों टख़ने लहूलहान (रक्त रंजित) हो गए, वहाँ से लौट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का आए, तथा मुतइम बिन अदी की ज़मानत पर मक्का में प्रवेश किया।

अद्दास का इस्लाम	वहाँ से लौटते हुए रास्ते में अद्दास जोकि ईसाई थे उनसे भेंट हुई तो वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ले आए तथा आपकी पुष्टि की।
जिन्नों का इस्लाम	उसी मार्ग में नख़ला नामक स्थान पर नसीबैन समुदाय से संबंध रखने वाले सात जिन्नों के एक समूह का आपके पास से गुज़र हुआ, उन्होंने क़ुरआन को सुना तो इस्लाम स्वीकार कर लिया।
इस्रा व मेराज (आसमान की सैर)	फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सशरीर व मय रूह़ रात्रि में मस्जिद -ए- अक़्सा ले जाया गया, तत्पश्चात वहाँ से सशरीर एवं मय प्राण आपको मेराज कराई गई अर्थात आसमानों के ऊपर अल्लाह के पास ले जाया गया, अल्लाह तआला ने आपसे वार्तालाप किया तथा आपके ऊपर नमाज़ फ़र्ज़ किया।
आपका क़बीलों के समक्ष इस्लाम पेश करना	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में रह कर क़बीलों को अल्लाह तआला की ओर बुलाते रहे, और प्रत्येक वर्ष हज के मौसम में आप उनके समक्ष अपने आपको पेश करते कि वो आपको शरण दें ताकि आप अपने रब की रिसालत को लोगों तक पहुँचा सकें और इसके बदले उन्हें स्वर्ग मिलेगा, किसी भी क़बीला ने आप के निमंत्रण को स्वीकार नहीं किया, वास्तव में यह सम्मान तो अल्लाह तआला ने अंसार के भाग्य में लिख दिया था, अतः वहाँ के छः लोग आए और अल्लाह व उसके रसूल की दावत को स्वीकार किया, तत्पश्चात वो लोग मदीना लौटे और अपने समुदाय को इस्लाम की दावत दी यहाँ तक कि इस्लाम फैल गया और अंसार के घरों में से कोई घर ऐसा नहीं बचा जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चर्चा न होती हो।
अंसार तथा अक़बा की बैअत (वचन) — पहली बैअत	अगले वर्ष अंसार के १२ व्यक्ति मक्का आए, जिनमें से पाँच तो वही पहली बार वाले छः लोगों में से थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे सूरा मुमतहिना में वर्णित महिलाओं वाली बैअत (वचण) अक़बा (कठिन घाटी) में लिया, तत्पश्चात वो लोग मदीना लौट गए।
अंसार तथा अक़बा की बैअत (वचन) — दूसरी बैअत	उससे अगले वर्ष ७३ पुरूष तथा दो महिलाएं आईं, यह अंतिम अक़बा वाले थे, उन्होंने यह बैअत किया (वचन दिया) कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वैसा ही बचाव करेंगे जैसे वो अपनी महिलाओं, संतानों का करते हैं तथा जैसी वो अपनी जानों की रक्षा करते हैं, जिसके बाद आप तथा आपके सहाबा ने उनकी ओर प्रस्थान किया था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनमें से बारह लोगों को नक़ीब (सरदार) नियुक्त किया।

चौथा अध्याय: मदनी काल

हिजरत की अनुमति

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को मदीना की ओर हिजरत (पलायन) करने की अनुमति दी, तो वो लोग जत्था बना कर तलवार लटकाए हुए निकले, उनमें सबसे पहला जैसाकि प्रचलित है: अबू सलमा बिन अब्दुल असद मख़ज़ूमी थे, और एक राय के अनुसार वह: मुसअब बिन उमैर थे, वो लोग अंसार के पास उनके घरों में उतरे, और अंसार ने उन्हें शरण दिया, उनकी सहायता की और इस तरह मदीना में इस्लाम फैल गया।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी हिजरत की अनुमति मिल गई, तो आप रबीउल अव्वल के महीना में सोमवार के दिन मक्का से निकले, उस समय आपकी आयु ५३ वर्ष थी, और आपके संग अबू बकर सिद्दीक़ तथा अबू बकर के स्वतंत्र किए हुए दास आमिर बिन फ़ुहैरा थे, और आप लोगों का मार्गदर्शक अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित लैसी था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के संग ग़ार -ए- सौर (सौर नामक गुफा) में दाख़िल हुए तथा उसमें तीन दिन तक रहे, फिर साहिल के रास्ते वहाँ से कूच किया।

आपका मदीना में प्रवेश

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं आपके साथी मदीना पहुँचे -जोकि १२ रबीउल अव्वल सोमवार का दिन था- तो मदीना के ऊपरी भाग क़ुबा में बनू अम्र बिन औफ़ के पास विश्राम के लिए उतरे और उनके पास चौदह दिनों तक ठहरे रहे।

इस्लाम की सर्वप्रथम मस्जिद

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुबा में मस्जिद की नींव रखी, अब्दुलल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि: "**नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्रत्येक शनिवार को पैदल अथवा सवार हो कर क़ुबा जाया करते थे**", और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**क़ुबा में नमाज़ अदा करना उमरा करने के समान है**"।

मस्जिद -ए- नबवी का निर्माण

फिर वहाँ से अपनी ऊँटनी पर सवार हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चले, लोग आप की ऊँटनी की लगाम पकड़-पकड़ कर आप से विनती कर रहे थे कि आप उनके यहाँ ठहरें, आप उनसे बस इतना कहते: "**इसका मार्ग छोड़ दो इसे आदेश मिला हुआ है**", अंततः ऊँटनी उस स्थान पर जाकर बैठ गई जहाँ आज मस्जिद -ए- नबवी है, जोकि उस समय बनू नज्जार के दो बालक: सह्ल व सुहैल का खलिहान था, वहाँ आप अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के घर उतरे, फिर आपने उस खलिहान के स्थान पर अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ मिल कर कच्ची ईंट एवं खजूर की टहनी से मस्जिद का निर्माण किया, तत्पश्चात अपने तथा अपनी पत्नियों के लिए उसी के बग़ल में निवास स्थान का निर्माण किया, उसमें सबसे समीप आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का घर था, फिर सात महीना बीत जाने के बाद अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु के घर से यहाँ स्थानांतरण किया।

भाईचारा	मस्जिद निर्माण के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुहाजिरीन जिनकी संख्या नब्बे थी तथा अंसार के मध्य एक-दूजे की सहायता के आधार पर भाई चारा (बंधुत्व) कायम किया, तथा बद्र की घटना से पहले तक वो लोग एक दूसरे के मृत्यु पश्चात उत्तराधिकारी (वारिस) भी बनते थे।
यहूदी	जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आए और यहूदियों ने आपको देखा तो समझ गए कि आप सच्चे रसूल हैं और आप वही हैं जिनका वर्णन वो अपनी किताब तौरात में पाते थे, इसके बावजूद उनमें से बहुत कम लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया जिनमें से एक उनके ज्ञानी एवं प्रकांड विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों के क़बीले बनू क़ैनुक़ाअ, बनू नज़ीर तथा बनू क़ुरैज़ा से संधि (मैत्री) की।
क़िबला का परिवर्तन	मेराज में नमाज़ फ़र्ज़ होने के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल मक़दिस की ओर घूम कर नमाज़ पढ़ा करते थे, और आपकी चाहत थी कि क़िबला बदल कर मक्का कर दिया जाए और इसी आशा में आप अपने मुख को आकाश की ओर उठा कर देखा ताका करते थे, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारीः (**हम आपके मुख को बार-बार आसमान की तरफ उठते हुए देख रहे हैं, हम आपका रुख़ उस क़िबला की ओर फेर देंगे जिससे आप प्रसन्न हो जाएंगे**)। अल-बक़राः १४४, और ऐसा सन दो हिजरी में हुआ, अतः हिजरत के दूसरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़िबला, काबा से बदल दिया गया।
जिहाद की अनुमति	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना में पूर्णरूपेण स्थापित हो गए तथा अंसार ने हर प्रकार से आपकी सुरक्षा की तो अल्लाह तआला का यह आदेश अवतरित हुआः (**जिन (मुसलमानें) से (काफिर) युद्ध कर रहे हैं उन्हें भी मुकाबला (प्रतिकार) करने की अनुमति दी जाती है क्योंकि वो मज़लूम -पीड़ित- हैं, निःसंदेह अल्लाह उनकी सहायता करने में समर्थ है, ये वो हैं जिन्हें नाहक़ अपने घरों से निकाला गया सिर्फ इतनी सी बात कहने पर कि हमारा रब (प्रभु) केवल अल्लाह है**)। अल-हज्जः ३९-४०, अतः अल्लाह तआला ने मोमिनों को मुश्रिकीन के विरुद्ध युद्ध की अनुमति दे दी। और आपके प्रारंभिक ग़ज़वों में से ग़ज़वा -ए- अबवा, बुवात़, उशैरा तथा कुछेक और सरीय्या हैं।
ग़ज़वा -ए- बद्र (बद्र नामक युद्ध)	हिजरत के दूसरे वर्ष रमज़ान मास में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन सौ से कुछेक ऊपर (लगभग तीन सौ तेरह) मोमिनों के संग शाम से लौट रहे क़ुरैश के क़ाफिला की तलाश में निकले, तो अबू सुफियान उस क़ाफिला को दूसरे मार्ग से लेकर निकल गया, और शैतान ने क़ुरैश को मोमिनों से युद्ध करने के लिए उभारा अतः वो निकले और बद्र नामक स्थान पर दोनों समूह की भेंट हुई, और यही वह महा युद्ध ग़ज़वा -ए- बद्र अल-कुबरा है जिसे यौमुल फ़ुरक़ान (सत्य एवं असत्य के बीच अंतर स्पष्ट कर देने वाला दिन) भी कहा जाता है। जब दोनों समूह आपस में टकराए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रब से गिड़गिड़ा कर दुआ माँगी, तो अल्लाह तआला ने फरिश्तों के द्वारा मोमिनों की सहायता की जो उनके संग युद्ध लड़ रहे थे, और अल्लाह तआला ने काफिरों के ऊपर आपको विजयी किया तथा अपने कलमा को सर्वोच्चता प्रदान की, बद्र में मुश्रिकीन में से सत्तर आदमी मारे गए तथा मोमिनों में से चौदह आदमी शहीद हुए।

ग़ज़वा बनू क़ैनुक़ाअ	सन तीन हिजरी में बनू क़ैनुक़ाअ ने संधि तोड़ दिया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पंद्रह रातों तक उनका घेराव किया, फिर वो आपके हुक्म पर उतरे तो आपने उन्हें छोड़ दिया, और उनकी संख्या उस समय सात सौ थी।
ग़ज़वा -ए- उहुद	ग़ज़वा -ए- उहुद शव्वाल में हुआ, जब क़ुरैश बद्र में मारे गए अपने लोगों का बदला लेने के लिए लगभग तीन हज़ार लोगों को लेकर आए और जब वो लोग मदीना पहुँच गए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लगभग सात सौ लोगों को लेकर उहुद की ओर निकले, बाद में मुनाफ़िक़ीन आपका साथ छोड़ कर निकल गए। दिन के आरंभिक भाग में मुसलमानों का पलड़ा भारी था, फिर अल्लाह तआला ने मुसलमानों की परीक्षा ली और गेंद अब मुश्रिकीन के पाले में थी यहाँ तक कि वो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुँच गए और आपको घायल व आहत कर दिया तथा आपके सामने के दो दांत तोड़ दिए, उस दिन आपके साथ फरिश्तों ने भी लड़ाई लड़ी, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में से सत्तर लोग शहीद हो गए जिनमें हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब, मुसअब बिन उमैर, अनस बिन नज़्र तथा फरिश्तों द्वारा स्नान दिए गए हनज़ला रज़ियल्लाहु अन्हुम आदि थे। उस दिन तल्हा बिन उबैदुल्लाह की बड़ी अच्छी परीक्षा हुई यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**तल्हा ने आज वाजिब कर लिया**" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा मुसलमान सिमट कर पहाड़ के पास आ गए और अल्लाह तआला ने सभों को मुश्रिकीन से बचा लिया। उहुद का दिन परीक्षा एवं जाँच का दिन था, अल्लाह तआला ने उस दिन मोमिनों की परीक्षा ली थी, और मुनाफ़िक़ खुल कर सामने आ गए, तथा जिसे अल्लाह ने चाहा शहादत से सम्मानित किया। ग़ज़वा के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुनः एक बार फिर क़ुरैश के निकलने की सूचना मिली ताकि मुसलमानों का समूल नाश कर दें, आप इस घायल अवस्था में भी मोमिनों को लेकर उनका मुकाबला करने के लिए निकले, जब हमरा अल-असद नामक स्थान पर क़ुरैश को इसकी सूचना मिली तो पस्पाई अपनाते हुए वो मक्का लौट गए।
सन ४ हिजरी	सन चार हिजरी में बेर -ए- मऊना की घटना घटी जिसमें सत्तर हाफिज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम क़त्ल कर दिए गए, और इसी वर्ष नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नज़ीर का घेराव किया यहाँ तक कि उनके दिलों में धाक बैठ गई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें मदीना से निकाल बाहर किया, और उन्हीं के संबंध में सूरह हश्र नाज़िल हुई।
ग़ज़वा -ए- मुरैसीअ	हिजरत के पाँचवे वर्ष नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू मुसतलिक़ से युद्ध के लिए निकले और विजयी हो कर लौटे, इसी रास्ते में तयम्मुम मशरूअ हुआ अर्थात इसकी अनुमति दी गई, और इसी मार्ग में इफ्क (बोहतान, आरोप, लांछन) की घटना घटी, जहाँ मुनाफ़िक़ों ने पाक व पवित्र मोमिनों की माता जी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर लांछन लगाया था, यह मामला स्वयं उनके लिए तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए बड़ा कठिन था यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने सूरह नूर में उनकी बराअत व सतीत्व का ऐलान किया, और बोहतान लगाने वालों को हद्द में कोड़े लगाए गए।

ग़ज़वा -ए- अहज़ाब

हिजरत के छठे वर्ष शव्वाल में ग़ज़वा -ए- ख़न्दक़ (अहज़ाब) घटा, जब यहूदियों ने क़ुरैश तथा जिनके संग उनकी संधि थी सबने मिल कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं आपके सहाबा को क़त्ल करने का प्लान बनाया, इस प्रकार क़ुरैश, बनू सुलैम, बनू असद, फ़ज़ारा तथा अशजअ आदि मिल कर दस हज़ार की संख्या में मदीना आए।

सलमान फारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़न्दक़ (खाई, गर्त) खोदने का विचार दिया, अतः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन हज़ार की संख्या में निकले और "सलअ" नामी पहाड़ को अपने पीछे किला के रूप में रखा तथा ख़न्दक़ को अपने सामने रखा, आप मैत्री संधि वाले बनू क़ुरैज़ा की ओर से निश्चिंत थे किंतु उसने संधि तोड़ दिया और आपके विरोधियों से मिल गया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने युद्ध के लिए आई हुई सेना तथा बनू क़ुरैज़ा की ओर नुऐम बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा, उन्होंने युक्ति लगा कर दोनों के बीच अलगाव करा दिया, फिर अल्लाह तआला ने उस अहज़ाब (सेना) पर वायु (हवा, तूफ़ान) को सेना के रूप में भेजा जिसने उनके तम्बू उखाड़ दिए और हांडियों को पलट दिया, तूफ़ान ने उन्हें हिला कर रख दिया और उनके दिलों में आतंक बैठ गया और वो पस्पा होने पर मजबूर हो गए, इस प्रकार उनकी धुर्तता उनके कुछ काम न आई और वो वापस लौट गए।

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनु क़ुरैज़ा के पास आए और उनके बारे में निर्णय लेने का अधिकार साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।

और इसी ग़ज़वा के विषय में सूरा अहज़ाब नाज़िल हुई।

हुदैबिय्या की सुलह (मैत्री)

छठे वर्ष ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चौदह सौ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को साथ लेकर उमरा की नीयत से निकले, जब आप हुदैबीय्या नामक स्थान पर पहुँचे तो क़ुरैश ने आपको मक्का में प्रवेश करने से रोक दिया, और इस बात पर मुसालहत (मैत्री) की कि वो आपस में दस साल तक नहीं लड़ेंगे, और यह मैत्री मोमिनों के लिए एक प्रकार से फ़त्ह (विजय) प्राप्त करना था जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝١﴾ (**निःसंदेह हमने आपको एक खुल्लम-खुल्ला विजय दे दिया**)। अल-फ़त्हः १।

इस मैत्री में एक बात यह भी थी कि अगले वर्ष क़ुरैश मुसलमानों को उमरा के लिए मक्का आने की अनुमति देंगे, उमरा -ए- क़ज़ा (इस साल के छूटे हुए उमरा के बदले उमरा) सातवीं हिजरी के ज़िल क़ादा मास में अंजाम पाया।

ग़ज़वा -ए- ख़ैबर

हुदैबीय्या से लौटने के बीस दिन बाद मदीना के उत्तर में ख़ैबर के लिए आप निकले और वहां यहूदियों का लगभग बीस दिन तक घेराव किया, इसमें मुसलमानों को बहुत सारे कष्टों का सामना करना पड़ा, जब यहूदियों को अपने नाश का पक्का विश्वास हो गया तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुलह (मैत्री) करनी चाही, आप ने उनके प्राण की रक्षा की गारंटी देते हुए इस शर्त पर जाने दिया कि वो अपने पहने हुए कपड़ों के सिवा कुछ भी लेकर नहीं जाएंगे, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी ज़मीन की पैदावार के आधे हिस्से के एवज़ उनसे मुआहदा (संधि) किया।

जाफ़र का आना

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर में थे कि तभी अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान होकर मदीना पधारे, और इसी बीच आपके चचेरे भाई जाफर बिन अबू तालिब और जो लोग हबशा में रुके हुए थे उनके साथ आ गए और ख़ैबर में ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भेंट हो गई, और उन लोगों के संग अशअरी क़बीला के लोगों में से अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथी लोग भी आए।

ग़ज़वा -ए- मूअता

आठवें वर्ष ग़ज़वा -ए- मूअता की घटना घटी, और इसका कारण यह था कि शुरहबील बिन अम्र ग़स्सानी रोम के राजा ने उसकी ओर भेजे गए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दूत को क़त्ल कर दिया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चहेते ज़ैद बिन हारिसा के प्रतिनिधित्व में तीन हज़ार सहाबियों को रवाना किया और फ़रमायाः "**यदि ज़ैद शहीद हो जाएं तो जाफर बिन अबू तालिब कमांडर होंगे और यदि जाफर भी शहीद हो जाएं तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा सेनापति होंगे** (रज़ियल्लाहु अन्हुम)" और उधर से हिरक़्ल और उनके संधि-मित्र अरब लोग दो लाख की संख्या में निकले तथा मूअता नामक स्थान पर दोनों की भेंट हुई, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तय किए गए सभी कमांडर शहीद हो गए तो ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पताका अपने हाथ में लिया और बड़े अच्छे ढ़ंग से सेना का नेतृत्व किया एवं मुसलमानों को ले कर वहाँ से निकल गए और इस प्रकार अल्लाह तआला ने शत्रुओं से उन लोगों को बचा लिया।

मक्का महा विजय

इसी वर्ष क़ुरैश के संधि-मित्र बनू बकर ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के संधि-मित्र क़बीला ख़ुज़ाआ पर आक्रमण कर दिया और क़ुरैश ने भी गुप्त रूप से उनकी सहायता की, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना मिली तो आपने मक्का विजय का निश्चय किया, अबू सुफियान ने मदीना आकर इस विषय में बात करनी चाही परंतु आपने उसकी एक न सुनी, तो उसने अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा कि आप लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस संबंध में बात करें परंतु उन दोनों ने इंकार कर दिया, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला से दुआ किया कि अल्लाह क़ुरैश से इस मामले को गुप्त रखे ताकि उन्हें आपके आक्रमण की बिल्कुल भी ख़बर न हो तो अल्लाह तआला ने आपकी दुआ को क़बूल कर लिया, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हज़ार की संख्या में निकले यहाँ तक कि मक्का में प्रवेश कर गए।

विजय से कुछ देर पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया।

और जो बातें आपने मक्का विजय के पूर्व कही थीं उनमें से यह भी था किः "**जो अबू सुफियान के घर में प्रवेश कर जाए उसे अमन है, और जो मस्जिद (-ए- हराम) में प्रवेश कर जाए उसे अमन है तथा जो अपने घर के द्वार बंद करले उसे भी अमन है**", इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने केवल उसी से युद्ध किया जो युद्ध के लिए निकले, सिवाय उन चंद लोगों के जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा मुसलमानों को अत्यधिक कष्ट पहुँचाया था आपने उनके जान का कोई मोल नहीं रखा।

जब आप मक्का में दाख़िल हुए तो बिना एहराम की स्थिति में ही काबा का तवाफ़ किया (चक्कर लगाया), फिर उस्मान बिन तल्हा को बुलाया तथा उनसे काबा की कुंजी ले कर उसके अंदर एवं उसके आस-पास जो मूर्तियां थीं सबको तोड़ दिया, फिर कुंजी उस्मान बिन तल्हा को वापस कर दी।

मक्का विजय के पश्चात एक बड़ी संख्या ने इस्लाम स्वीकार किया, बल्कि क़बीला के क़बीला लोग मुसलमान हो कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आने लगे।

मूर्तियों को तोड़ना

जब अल्लाह तआला ने अपने नबी को मक्का पर विजय दे दिया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को मक्का के आस-पास मूर्तियों को तोड़ने के लिए भेजा, अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को सुवाअ को तोड़ने के लिए भेजा, साद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को मनात तोड़ने के लिए भेजा, ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को उज़्ज़ा तोड़ने के लिए भेजा, तुफैल रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ुल कफ्फैन तोड़ने के लिए तथा अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तैई क़बीला का बुत तोड़ने के लिए भेजा।

ग़ज़वा -ए- हुनैन

जब हवाज़िन वालों ने मक्का विजय के बारे में सुना तो एक क़ाफिला ले कर रसूलुलालह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर निकला, और अपने संग अपने धन, महिलाएँ तथा अपने बच्चे भी लाए, रसूलुललाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनका मुक़ाबला करने के लिए बारह हज़ार की संख्या ले कर निकले, उस दिन मुसलमान अपनी संख्या पर आत्ममुग्ध थे यहाँ तक कि जब हुनैन नामक घाटी में पहुँचे तो हवाज़िन ने उनके ऊपर एक जुट हो कर हमला कर दिया जिसकी वजह से घबराहट के कारण लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से असावधान हो गए, और आपके साथ बस कुछ मुहाजिर और आपके घर वाले रह गए, फिर अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हौसला दिया और वो पलट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए, और आपके संग मिल कर युद्ध किया यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने शत्रुओं के विरुद्ध उन्हें विजयी कर दिया, और हवाज़िन के लोग भाग कर ताइफ़ चले गए।

फिर हवाज़िन के चौदह लोग मुसलमान हो कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और आपसे अपने बंदियों को स्वतंत्र करके उनपर कृपा करने का निवेदन किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा ही किया और आपकी देखा-देखी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी ऐसा किया।

ग़ज़वा -ए- ताइफ़

जब आप हवाज़िन से फ़ारिग़ हुए तो ग़ज़वा -ए- ताइफ़ का इरादा किया, अतः आप वहाँ आए और उनके क़िला (दुर्ग) का आठ दिन तक घेराव किए रखा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिना युद्ध किए वापस लौट गए।

ग़ज़वा -ए- तबूक

छठी हिजरी में ग़ज़वा -ए- तबूक (ग़ज़वा -ए- उस्रा अर्थात संकट एवं निर्धनता) की घटना पेश आई, वह समय अत्यंत गर्मी का तथा फलों के पकने एवं छाया में रहने का था, ऐसे समय में युद्ध के लिए निकलना बड़ा कठिन था, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निकलने का इरादा किया तो लोगों को ख़र्च करने के लिए उभारा, तो उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सौ ऊँट मय टाट व कजावा (काठ, हौदा) तथा उसके साथ एक हज़ार दीनार भी दिया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "**आज के बाद उस्मान जो भी करें उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकता**", और अन्य सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी सामर्थ्य भर अल्लाह के मार्ग में ख़र्च किया।

आम मुनाफ़िक़ीन इससे पीछे रहे, और आपके चयनित सहाबा में से भी तीन लोग काब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मुरारह बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हुम बिना किसी उज़्र (विवशता) के पीछे रह गए थे, तो उन लोगों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना वापस आने पर क्षमा याचना की, तो उन्हीं के विषय में सूरा तौबा की यह आयत उतरी (और वो तीन लोग जो पीछे रह गए थे)। अल-तौबाः ११८, अल्लाह तआला ने उनकी सच्चाई के सबब उनकी तौबा को स्वीकार कर लिया, और इस सूरा में मुनाफ़िक़ों की निंदा की गई है तथा इसी चर्चा पर यह सूरत समाप्त होती है, इसीलिए इस सूरा का नाम फाज़िहा (फजीता करने वाला) भी रखा गया है क्योंकि इसने उन लोगों का फजीता तथा अपयश कर दिया था।

ग़ज़वा -ए- तबूक

इसी ग़ज़वा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐला वालों से जिज़या के ऊपर सुलह (संधि) किया, इसी प्रकार जरबा तथा अज़रह वालों से भी, और उनके लिए परवाना (आदेश-पत्र) लिख कर दिया, एवं दौमा के राजा उकैदिर से भी जिज़या लेकर संधि किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक में दस से कुछेक ऊपर रातों तक रुके रहे फिर बिना युद्ध के ही मदीना लौट आए।

जब आप मदीना लौट कर आए तो अल्लाह तआला ने मस्जिद -ज़िरार- को ध्वस्त करने का आदेश दिया जिसे मुनाफ़िक़ों ने बनाया था (**हानि पहुँचाने, कुफ्र करने तथा मोमिनों में दराड़ डालने और उस व्यक्ति के घात में बैठने के लिए जो इससे पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुका है**)। अल-तौबाः १०७, अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञा से यह मस्जिद धवस्त कर दी गई, और यह अंतिम ग़ज़वा था जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं सम्मिलित हुए थे।

प्रतिनिधी मंडल

ग़ज़वा -ए- तबूक के बाद स़क़ीफ़ ने इस्लाम स्वीकार किया, और हिजरत का यह नौवां वर्ष प्रतिनिधि मंडलों का वर्ष कहलाया, क़बीला वाले समूह के समूह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर इस्लाम स्वीकार करते थे, इन्हीं में से बनी तमीम का वफ्द था जिसके सरदार उत़ारिद बिन ह़ाजिब तमीमी थे, और तैई का वफ्द (प्रतिनिधि मंडल) जिसके सरदार ज़ैद अल-ख़ैल थे, और अब्दुल क़ैस का वफ्द जिसके सरदार जारूद अब्दी थे, और बनू ह़नीफ़ा का वफ्द भी जिसमें वह मुसैलमा कज़्ज़ाब (महा झूठा) भी था जिसने बाद में चल कर नबूवत का झूठा दावा किया।

अबू बकर का हज

हिजरत के नौवें वर्ष नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर (सरदार) बना कर हज के लिए भेजा, तो उन्होंने लोगों के संग (अमीर की हैसियत से) हज किया , और अली रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा जो सूरा तौबा की प्रारंभिक आयतें पढ़ रहे थे और मुश्रिकीन को उनकी संधि लौटा रहे थे, और लोगों में यह ऐलान कर दिया कि इस वर्ष के बाद से मुश्रिकीन तथा नंगे लोग काबा का तवाफ़ नहीं कर सकेंगे जैसे वो लोग जाहिलीयत युग में किया करते थे।

हज्जतुल वदा

सन दस हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल वदा (अंतिम हज) किया और आपके संग विभिन्न क़बीलों तथा नगर के लोग निकले यहाँ तक कि संख्या एक लाख के पार पहुँच गई, चुनाँचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें हज के मनासिक (ढ़ंग) बताए, और अरफ़ा के दिन उन्हें ख़ुत्बा (भाषण) दिया और अल्लाह तआला का यह फरमान तिलावत कर के सुनायाः (**आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूर्ण कर दिया, और तुम्हारे ऊपर अपनी नियामतें पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हो गया**)। अल-माइदाः ३ । इस प्रकार आपने उन्हें सूचना दी कि इस्लाम पूर्ण हो चुका, और उन्हें क़ुरआन व ह़दीस़ को दृढ़ता के साथ पकड़े रहने की वसीयत की और एक के लिए दूसरे के रक्त (प्राण), धन तथा इज़्ज़त के साथ खिलवाड़ करना ह़राम क़रार दिया, मानो यह आपकी ओर से अंतिम व विदाई वाला ख़ुत्बा था।

उसामा को भेजना

सन ग्यारह हिजरी सफर के महीना में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोम के लोगों से युद्ध करने के लिए एक सेना तैयार की जिसका सेनापति उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बनाया, अतः जब वो निकले और जुर्फ के स्थान पर पड़ाव डाला ही था कि इसी बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीमारी की सूचना उन्हें प्राप्त हुई।

आप ﷺ के ग़ज़वों का सारांश

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ज़वों, बुऊस़ एवं सरीय्या का संक्षिप्त विवरण

आपके सभी ग़ज़वात, बुऊस़ तथा सराया (वह सेना जो आपने लड़ाई के लिए भेजे) यह सब हिजरत के बाद दस वर्ष के अंतराल में हुआ।

जहाँ तक आपके सरीय्या एवं बुऊस़ की बात है तो उनकी संख्या लगभग साठ है, और ग़ज़वों की संख्या २७ है, जिनमें से नौ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने युद्ध लड़ा जो इस प्रकार हैं: बद्र, उहुद, ख़न्दक़, क़ुरैज़ा, मुस़तलिक़, ख़ैबर, फत्ह -ए- मक्का, हुनैन, ताइफ, और इनमें से कुछ के संबंध में क़ुरआन भी उतराः

इन ग़ज़वों के संबंध में जो क़ुरआन में अवतरित हुआ

ग़ज़वा -ए- बद्रः इस संबंध में सूरा अन्फाल उतरी, और इसको सूरा बद्र भी कहा जाता है।

ग़ज़वा -ए- उहुदः इस संबंध में सूरा आल -ए- इमरान का अंतिम भाग उतरा, अल्लाह तआला के इस फरमानः (**हे नबी उस समय को याद करो जब आप सुबह ही सुबह अपने घरों से निकल कर मोमिनों को युद्ध के मैदान में लड़ाई के मोरचों पर बैठा रहे थे**)। आले इमरानः १२१, से लेकर अंत से कुछ पहले तक।

ग़ज़वा -ए- ख़न्दक़, बनू क़ुरैज़ा और ख़ैबरः इस संबंध में सूरा अह़ज़ाब का कुछ भाग उतरा।

ग़ज़वा -ए- बनू नज़ीरः इस विषय में सूरा ह़श्र नाज़िल हुई।

ग़ज़वा -ए- हुदैबीय्या व ख़ैबरः इस संबंध में सूरा फ़त्ह़ अवतरित हुई, और इसमें **फ़त्ह़** (मक्का विजय) की ओर इशारा किया गया है, और सूरा नस्र में स्पष्ट रूप से इस फ़त्ह़ का वर्णन किया गया है।

ग़ज़वा -ए- तबूकः इस विषय में सूरा तौबा की कुछ आयतें नाज़िल हुईं।

एक ग़ज़वा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घायल हुए जो कि ग़ज़वा -ए- उहुद है, और आप के संग फरिश्तों ने बद्र, उहुद तथा हुनैन में युद्ध लड़ा, और ख़न्दक़ के दिन फरिश्ते अवतरित हुए तो मुश्रिकीन हिला दिए गए एवं उनकी पराजय हुई, और इसी युद्ध में आपने मुश्रिकीन के चेहरों पर कंकर फेंका तो वो भाग गए, और दो युद्धों में आप को विजय प्राप्त हुआः बद्र और हुनैन में, और एक युद्ध ताइफ़ में मिंजनीक़ (मंजनीक, तोप के समान एक यंत्र जिससे पत्थर बरसाए जाते थे) का प्रयोग किया, और ख़न्दक़ के द्वारा एक युद्ध में बचाव किया जोकि अह़ज़ाब है जिसका विचार सलमान फारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिया था।

नबी ﷺ की बीमारी और मृत्यु

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी और मृत्यु

फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संसार में रहने तथा अल्लाह से भेंट करने एवं जन्नत में से एक का चयन करने का अधिकार दिया तो आपने अल्लाह से भेंट और जन्नत को चुना, अतः इसके पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत बीमार हो गये तो आपने अपनी पत्नियों से आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में तीमारदारी (परिचर्या) के लिए रुकने की इच्छा प्रकट की जिसको सभी ने सहृष स्वीकार कर लिया, जब आपके अंदर मस्जिद में जा कर नमाज़ पढ़ाने की शक्ति नहीं बची तो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को आदेश दिया कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं जो इस बात की ओर इशारा था कि आप के बाद वही ख़लीफ़ा होंगे।

सन ग्यारह हिजरी सोमवार के दिन बारह रबीउल अव्वल को आप लोगों की ओर निकले जब वो फज्र की नमाज़ पढ़ रहे थे तो आपने पर्दा उठाया और दरवाज़ा खोला ताकि उनको देखें, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी ओर इशारा किया कि नमाज़ मुकम्मल करें और आप उनको देख कर मुस्काए, फिर जब चाश्त (सूर्योदय से एक पहर) का समय हुआ तो आपके प्राण पखेरू उड़ गए, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु सबसे बड़ी विपदा थी जो मुसलमानों पर आन पड़ी थी, आपके मृत्यु से मुसलमानों को अत्यंत दुःख पहुँचा।

फिर लोग अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास इकट्ठा हुए और आपके लिए ख़लाफ़त की बैअत की, चूँकि आपका सर्वप्रथम इस्लाम स्वीकार करना और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद इस उम्मत पर सबसे अधिक उपकार करना सर्वविदित था अतः कोई भी आपकी बैअत से पीछे नहीं रहा।

तत्पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को स्नान कराया गया और तीन सफेद कपड़े में कफ़न दिया गया फिर मोमिनों की माता आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के कमरे में उसी स्थान पर जहाँ आपने अंतिम सांस ली थी वहीं दफ़न किया गया, और नबियों के विषय में यही अल्लाह की सुन्नत रही है कि वो वहीं दफ़न होते हैं जहाँ उनकी मृत्यु होती है, तथा आपके जनाज़ा की नमाज़ इंसानों एवं जिन्नों दोनों ने पढ़ी। आप पर मेरे रब का दरूद व सलाम नाज़िल हो, हम इस बात की गवाही देते हैं कि आपने अमानत अदा कर दिया, उम्मत को पूर्णरूपेण नसीहत कर दी, और अल्लाह के रास्ते में जिहाद का हक़ अदा कर दिया, अतः अल्लाह तआला उससे भी बेहतर बदला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दे जो वह एक नबी को उसकी उम्मत की ओर से देता है। और हरेक प्रकार की प्रशंसा समस्त संसार के रब (प्रभु व पालनहार) अल्लाह ही के लिए है।

समाप्तिः

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कवि हस्सान बिन साबित ने निम्नांकित पंक्तियाँ कही थीं:

हे मेरे रब, अपने नबी के संग हमें जन्नत में इस प्रकार से इकट्ठा कर कि अति इर्ष्यालु आँखें इससे दूर रहें

जन्नतुल फ़िरदौस में, और इसे हमारे भाग्य में लिख दे, हे तेज, प्रताप व जलाल, बुलंदी एवं सरदारी वाले

अल्लाह एवं जो उसके अर्श के आस-पास है और पवित्र आत्मा सभी मुबारक अहमद ﷺ पर दरूद भेजते हैं

तृतीय परीक्षा

गलत	सही	प्रश्न
☐	☐	❁ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बकरियां चराईं जोकि आपके सब्र, निर्धनों एवं दुर्बलों पर कृपा एवं उनका ध्यान रखने का एक बड़ा कारण था
☐	☐	❁ जब आपकी आयु चालीस वर्ष हुई तो आप पर नबूवत का सूर्य उदय हुआ, और अल्लाह तआला ने जुमा (शुक्रवार) के दिन आप को रिसालत दे कर सम्मानित किया
☐	☐	❁ रसूलुल्लाह के प्रति क़ुरैश का अत्याचार बहुत बढ़ गया यहाँ तक कि आपको तीन वर्ष के लिए अबू तालिब की घाटी में क़ैद कर दिया, और जब आप घाटी से निकले तो आपकी उम्र ४९ वर्ष हो चुकी थी

❁ आप मक्का में पैदा हुए: ☐ फ़ील वाले साल ☐ हिजरत से ५३ वर्ष पूर्व ☐ सभी

❁ आपके वह्य के प्रारंभिक दौर मे: ☐ आप एकांतप्रिय थे ☐ सच्चा सपना ☐ सभी

❁ वह्य की श्रेणियों की संख्या: ☐ पाँच ☐ सात ☐ तीन

❁ आप के दावत की श्रेणी: ☐ दो ☐ तीन ☐ पाँच

❁ फिर आपको सशरीर व प्राण रात्रि में मस्जिद -ए- अक़्सा ले जाया गया, फिर वहाँ से सातों आसमान के ऊपर (....) अल्लाह के पास ले जाया गया जहाँ अल्लाह ने आपसे वार्तालाप किया और आप के ऊपर नमाज़ फ़र्ज़ किया: ☐ सशरीर ☐ सप्राण ☐ शरीर एवं प्राण के साथ

❁ इस्लाम की सर्वप्रथम मस्जिद है: ☐ ह़राम ☐ नबवी ☐ अक़्सा ☐ क़ुबा

❁ क़िबला परिवर्तन हुआ था: ☐ हिजरत के पूर्व मक्का में ☐ हिजरत के दूसरे वर्ष ☐ हिजरत के तीसरे वर्ष

❁ ग़ज़वा -ए- बद्र रमज़ान में सन: ☐ दो हिजरी में हुआ था ☐ तीन हिजरी में हुआ था

अबू बकर सिद्दीक़	ज़ैद बिन ह़ारिसा	बिलाल बिन रबाह	अली बिन अबू तालिब	**सर्वप्रथम जो रसूल पर ईमान लाए**
☐	☐	☐	☐	पुरूषों में
☐	☐	☐	☐	बच्चों में में
☐	☐	☐	☐	स्वतंत्र दासों में
☐	☐	☐	☐	दासों में

सात वर्ष	अब्दुल्लाह की मृत्यु हुई	लगभग सात वर्ष	अब्दुल मुत्तलिब	अबू तालिब ने	**आपका लालन-पालन**
☐	☐	☐	☐	☐	आपकी माता के बाद आपके दादा ... ने पाला
☐	☐	☐	☐	☐	फिर उनकी मृत्यु हुई और आपकी आयु थी
☐	☐	☐	☐	☐	उसके बाद आपके सगे चाचा ... आपका पालन किया
☐	☐	☐	☐	☐	और आप अभी गर्भ में थे
☐	☐	☐	☐	☐	आपकी माता का देहांत हुआ और आपकी आयु

केवल एक ग़ज़वा में	उनमें से नौ में	सत्ताईस	साठ	दस साल	**आपके ग़ज़वा व आपके द्वारा भेजी हुई सेना (बुऊ़स)**
☐	☐	☐	☐	☐	आपके समस्त ग़ज़वा व बुऊ़स हिजरत के पश्चात मात्र ... में हुए
☐	☐	☐	☐	☐	आपके सरीय्या व बुऊ़स की संख्या है लगभग
☐	☐	☐	☐	☐	आपके ग़ज़वा की संख्या
☐	☐	☐	☐	☐	आपने युद्ध लड़ा
☐	☐	☐	☐	☐	आप घायल हुए

विषय - सूची

- प्राक्कथन 3
- नबी ﷺ के गुण 5
- प्रथम परीक्षा 13
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत 15
- द्वितीय परीक्षा 20
- आप ﷺ की विशेषताएं 23
- आप ﷺ की पत्नियाँ एवं सगे-संबंधी 26
- नबूवत के पूर्व आप ﷺ की सीरत 31
- वह्य का आरंभ 33
- आप ﷺ की सीरत का मक्की काल 36
- आप ﷺ की सीरत का मदनी काल 39
- आप ﷺ के ग़ज़वों का सारांश 46
- आप ﷺ की बीमारी और मृत्यु 47
- तृतीय परीक्षा 48
- विषय – सूची 50

यह अति उत्तम एवं लाभदायक पुस्तक है, जो सुव्यवस्थित, सरल एवं संक्षिप्त रूप से हिंदी भाषा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्वभाव, गुण एवं जीवनी का बखान करती है।

विश्व की 62 भाषाओं में इस्लाम के बारे में प्रामाणिक एवं विश्वसनीय सामग्री निः शुल्क पढ़ने के लिए निम्नांकित वेबसाइट पर पधारें:

www.alsarhaan.com